तृतीय अध्याय

अध्ययन क्षेत्र का पारिस्थितिकीय विवेचन एवं विश्लेषण

किसी भी प्रदेश में नेतृत्व की प्रकृति को समझने के लिए वहाँ के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक व भौगोलिक परिवेश की जानकारी होना अत्यन्त आवश्यक है। क्योंकि नेतृत्व की प्रकृति पर इन समस्त पहलुओं का अत्यधिक प्रभाव रहता है। नेतृत्व की प्रकृति को निर्धारित करने में अनुयायियों की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। क्योंकि नेतृत्व की क्रिया नेता तथा अनुयायियों के बीच की होती है। प्रस्तुत अध्ययन में यह आवश्यक समझा गया कि जिससे महिला नेतृत्व को ठीक से समझा व जाना जा सके और अन्य किसी भी अध्ययन के द्वारा इसको तुलनात्मक अध्ययन के लिए तैयार किया जा सके।[1]

डेविड ईस्टन के अनुसार राजनीतिक व्यवस्था और उनके पर्यावरण (पारिस्थितिकी, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं जनसांख्यिकी के बीच निरंतर अंतक्रिया चलती रहती है।)[2] राजनीतिक व्यवस्था पर्यावरण से प्रभावित भी होती है और पर्यावरण को प्रभावित भी करती है। इसी प्रकार समाज के मूल्य, परम्परा, मानव–व्यवहार तथा सहभागिता आदि भी पारिस्थितिकी से प्रभावित होते हैं। अतः प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत क्षेत्र का पारिस्थितिकीय विवेचन किया गया है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में तथ्यों का क्रमबद्ध, व्यवस्थित एवं वस्तुनिष्ठ तरीके से संकलन हेतु अध्ययन क्षेत्र के रूप में भारत संघ के राजस्थान राज्य के अजमेर जिले की 138 ग्राम पंचायतों की महिला सरपंचों का चयन किया गया है। अतः पारिस्थितिकीय विश्लेषण में राजस्थान का संक्षिप्त परिचय देते हुए 138 ग्राम पंचायतों का विवेचन किया गया है।

राजस्थान : एक परिचय

क्र.सं.	वर्ग	राजस्थान
1	क्षेत्रफल (वर्ग किमी)	3,42,239
2	जनसंख्या(कुल)	68,621,012
3	पुरूष जनसंख्या	35,620,086
4	महिला जनसंख्या	33,000,926
5	नगरीय जनसंख्या	1,70,80,776
6	नगरीय पुरूष जनसंख्या	8,939,204
7	नगरीय महिला जनसंख्या	8,1414,572
8	ग्रामीण जनसंख्या	5,15,40,236
9	ग्रामीण पुरूष जनसंख्या	26,680,882
10	ग्रामीण महिला जनसंख्या	24,859,354
11	जनसंख्या वृद्धि दर (%)	21.44
12	जनसंख्या घनत्व (प्रति वर्ग किमी)	201
13	लिंगानुपात (1000)	926
14	नगरीय लिंगानुपात	911
15	ग्रामीण लिंगानुपात	932
16	साक्षरता (%)	67.06
17	पुरूष साक्षरता(%)	80.51
18	महिला साक्षरता(%)	52.66
19	ग्रामीण साक्षरता (%)	62.34
20	ग्रामीण पुरूष साक्षरता (%)	77.49
21	ग्रामीण महिला साक्षरता (%)	46.25
22	नगरीय साक्षरता (%)	80.73
23	नगरीय महिला साक्षरता (%)	71.53
24	नगरीय पुरूष साक्षरता (%)	89.16

स्त्रोत : Census 2011

भारतीय संस्कृति के अनुरूप ही राजस्थान राज्य भी वैविध्यपूर्ण संस्कृति की अनुपम विशेषता वाला प्रदेश है। यह प्रदेश वैदिक एवं आर्य संस्कृति का गढ रहा है।[3] यद्यपि राजस्थान राज्य में सभ्यता एवं संस्कृति का विकास प्रागैतिहासिक काल एवं सिंधु सभ्यता काल से ही रहा है, किन्तु स्वाधीनता से पूर्व तक राजस्थान एक संगठित इकाई नहीं वरन् भौगोलिक अभिव्यक्ति मात्र था।[4]

राजस्थान यश की दृष्टि से भारत का भव्य भाल, वीरता की दृष्टि से देश की सबल भुजा तथा संस्कृति की दृष्टि से भारत राष्ट्र का ह्रदय है। इसका वैभव अपार है।[5] भारत के ऐतिहासिक रंगमंच पर राजस्थान की भूमिका सदैव अद्वितीय रही है। राजस्थान की भूमि को एक–एक क्षण यहाँ के स्वाभिमान, देशभक्ति और अपनी मातृभूमि पर अपने प्राणों को न्यौछावर करने वाले रणबांकुरों के रक्त से रंजित हैं और यहाँ की वीरांगनाओं ने जौहर की धधकती हुई ज्वालाओं में सहर्ष अपने प्राणों की आहूति देकर जो महान आदर्श प्रस्तुत किया, उसकी समता का उदाहरण अन्य देशों के इतिहास से मिलना दुर्लभ है।[6]

राजनीतिक दृष्टि से यह एक रियासती राज्य था। प्राचीन ग्रंथों व शिलालेखों के अनुसार प्राचीन काल में राजस्थान शब्द का प्रयोग प्रदेश के रूप में नहीं वरन राजाओं के निवास स्थान के संदर्भ में किया जाता था। उदाहरणस्वरूप राजस्थान शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग सिरोही जिले के बसंतगढ़ में स्थित खीमल माता मंदिर के शिलालेख में पाया गया। सं. 682 वि(625ई.) के शिलालेख सन् 1665 में रचित 'मूता नैनसी की ख्यात' तथा 1731 में वीरभाण कृत राजरुपक में उक्त शब्द का प्रयोग किया गया।[7] जिस प्रदेश को आज राजस्थान कहते हैं वह स्वतंत्रतापूर्व राजपूताना कहलाता था। इस क्षेत्र को राजपूताना नाम सर्वप्रथम विलियम फ्रेंकलिन ने 1805 में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'मिलीट्री मेमायर्स ऑफ मिस्टर जार्ज टॉमस' में दिया था। ब्रिटिश काल में यह क्षेत्र राजपूताना के नाम से ही जाना जाता रहा।[8] राजस्थान भारत वर्ष के पश्चिमी भाग में स्थित एक बड़ा राज्य है जो प्राचीन काल से किसी

विशेष नाम से विख्यात नहीं था। प्रसिद्ध इतिहास लेखक कर्नल जेम्स टॉड ने इस राज्य का नाम 'रायथान' रखा क्योंकि स्थानीय साहित्य एवं बोलचाल में राजाओं के निवास के प्रांत को 'रायथान' कहते थे, इसी का संस्कृत रूप राजस्थान बना। टॉड ने राजस्थान शब्द की परिभाषा देते हुए कहा कि राजस्थान उस प्रदेश का नाम है जहाँ राजपूत राजा राज्य करते हैं।[9]

(1) भौगोलिक स्थिति :

राजस्थान भारतवर्ष का सबसे बड़ा राज्य है। भारत वर्ष के उत्तर पश्चिमी भाग में स्थित राजस्थान प्रदेश विषमकोणीय चतुर्भुजाकार आकृति में है। जो $23^0 3'$ उत्तरी अक्षांश से $30^0 12'$ उत्तरी अक्षांश तथा $69^0 30'$ पूर्वी देशान्तर से $78^0 17'$ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। राजस्थान का कुल क्षेत्रफल 3,42,239 वर्ग किलोमीटर है। यह विशाल भू–भाग देश का लगभग दसवाँ भाग है तथा विस्तार की दृष्टि से देश में पहला स्थान है।[10] प्रदेश की कुल सीमा 7933 किलोमीटर है। जिसमें 1070 किलोमीटर अंतर्राष्ट्रीय सीमा है जो पाकिस्तान व राजस्थान को अलग–अलग करती है। यह राजस्थान की पश्चिमी तथा उत्तर पश्चिमी सीमा है। प्रदेश की अन्य सीमाएँ उत्तर में पंजाब व हरियाणा, पूर्व में उत्तर प्रदेश, दक्षिण पश्चिम में गुजरात व दक्षिण पूर्व में मध्य प्रदेश राज्य से लगी हैं।[11] भारत की सबसे प्राचीन पर्वतमाला अरावली राजस्थान की भौगोलिक स्थिति का महत्वपूर्ण भाग है। राजस्थान का 60 प्रतिशत क्षेत्र यथा उत्तर–पश्चिमी भाग थार का रेगिस्तान और 40 प्रतिशत क्षेत्र यथा दक्षिण पूर्वी भाग गैर रेगिस्तानी क्षेत्र है। उत्तर पश्चिमी भाग में जैसलमेर, गंगानगर, चूरू, बीकानेर, बाड़मेर, जोधपुर, नागौर, जालौर, पाली तथा सीकर और झुन्झुनू का शेखावाटी क्षेत्र शामिल है। दक्षिणी पूर्वी भाग में उदयपुर, राजसमंद, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, सिरोही, अजमेर, टोंक, जयपुर, सवाई माधोपुर एवं सीकर और झुन्झुनू के दक्षिणी भाग आते हैं।[12] भू–आकारों की बनावट की दृष्टि से राज्य के चार भाग किए गए जा सकते हैं। पश्चिमी शुष्क रेतीला बालू का मैदान जिसके अंतर्गत अर्धशुष्क राजस्थान, बागड़ व शुष्क मरूस्थली भाग आते हैं।

अरावली पर्वत श्रृंखला और पर्वतीय क्षेत्र जिसके अंतर्गत अरावली श्रेणी एवं भोरट का पठार व उत्तरपर्वतीय क्षेत्र आते हैं। पूर्वी मैदान जिसमें बनास का मैदान, छप्पन का मैदान व चंबल का मैदान आते हैं। दक्षिण पूर्वी राजस्थान का पठार जिसमें विन्ध्यन कगार व दक्षिण लावा पठार आते हैं।[13] यह श्रीलंका से 5 गुना और इंग्लैण्ड से दो गुना बड़ा है।

(2) प्राकृतिक स्थिति एवं जलवायु :

प्रदेश में निरंतर बहने वाली नदियों की संख्या कम है। इन नदियों के अधिक गहराई पर बहने के कारण ये सिंचाई के बहुत काम नहीं आ रही है। यहाँ की मुख्य नदियाँ–चम्बल, बनास, काली सिंध, माही, लूनी, पार्वती तथा बाण गंगा आदि। जमीन के नीचे का पानी खारा व अत्यधिक गहराई पर है। देश की कुल वर्षा का यहाँ 1.1 पानी बरसता है।[14] चम्बल तथा लूनी राजस्थान की दो प्रमुख नदियाँ हैं। इनमें से चम्बल नित्यवाही प्रकृति की है जो मध्यप्रदेश के पास राजस्थान में प्रवेश करती है। प्रदेश के कोटा, बूंदी, सवाई माधोपुर तथा धौलपुर जिलों में बहने के बाद चम्बल उत्तर प्रदेश में इटावा नगर के पास यमुना में मिल जाती है। राजस्थान तक मध्य प्रदेश के बीच चम्बल नदी 241 किलोमीटर लम्बी सीमा बनाती है। इस नदी पर गांधी सागर, राणा प्रताप सागर, जवाहर सागर तथा कोटा बैराज बांध बने हैं। जिनका प्रदेश के विकास में प्रमुख योगदान है। प्रदेश का अधिकतम तापमान 52 डिग्री से.ग्रे. से न्यूनतम शून्य से 4 डिग्री से.ग्रे. रहता है।

राजस्थान देश में शुष्क जलवायु वाला राज्य है। जहाँ काफी उतार चढ़ाव के साथ सामान्यतः वर्षा का औसत 57.5 से.मी. रहता है। जहाँ अपर्याप्त एवं अनिश्चित वर्षा एवं मानसून के अल्पावधि ठहराव से यहाँ का भूजल स्तर निरंतर गिरता जा रहा है तथा देश में पानी की सर्वाधिक कमी वाला राज्य हो गया है। राज्य में दक्षिण पूर्व क्षेत्र से निकलने वाली चम्बल एवं माही नदियों के अलावा कोई बारहमासी नदी नहीं है।[15]

(3) सामाजिक परिदृश्य :

सामाजिक दृष्टि से राजस्थान में सभी जातियों एवं धर्मों के लोग रहते हैं। प्रो. के. एल. कमल[16] ने अपने अध्ययन में पाया कि स्वतंत्रता से पूर्व राजस्थान की सबसे प्रभावी जाति राजपूत थी, इनके पास सम्पत्ति तथा शक्ति दोनों थी, ब्राह्मण भी प्रभावी राजनीतिक समुदाय था, जो शासक को धार्मिक तथा नैतिक समर्थन देता था और शासक इन्हें इज्जत एवं धन देता था। मारवाड़ी समुदाय अपने धन सहित शासन की सेवा में था। मीणा जाति के लोग चौकीदारी का काम करते थे, तथा भील आदिवासी थे, उनका शासकीय कार्यों में दखल नहीं था। जाट जाति का भी एक गैर राजनीतिक परन्तु प्रभावी समुदाय बनाया हुआ था।

राजस्थान में इस समय मुख्यतः ब्राह्मण, राजपूत, वैश्य, पिछड़ा वर्ग में जाट, गुर्जर, माली, कुम्हार, यादव, अनुसूचित जाति, जनजाति में भील, मीणा, चारण, भाट, दरोगा, गरसिया, सहरिया काथोड़ी, बंजारे, गाडिया लुहार, मोची एवं मुसलमान आदि रहते है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान की कुल जनसंख्या 6,86,21,012 करोड़ है। जिनकी लगभग 150 जातियाँ, उपजातियाँ, शाखाएँ, उपशाखाएँ हैं। इनमें प्रमुख राजपूत, ब्राह्मण, वैश्य (ओसवाल, सरावगी, अग्रवाल, माहेश्वरी) आदि, काश्तकार जातियाँ (जाट, गुर्जर, माली, कलबी, सिरवी, पटेल, धाकड) आदि। मुस्लिम 8.01 प्रतिशत हैं जिसमें शेख, पठान, मेव, मुगल, सैयद आदि जातियाँ हैं। अनेकों जातियाँ ऐसी हैं जिसमें मुसलमानों व हिन्दुओं दोनों की प्रथाएँ मौजूद है उनमें खानजादा, कायमखानी और मेव प्रमुख हैं। आदिम जातियों में मीणा, भील, गरासिया, डामोर आदि हैं। जैन धर्म के 1.48 प्रतिशत लोगों में श्वेताम्बर, दिगम्बर, स्थानमवासी व तेरापंथी सम्प्रदाय हैं। इसके अतिरिक्त 1.28 प्रतिशत सिक्ख व 0.01 प्रतिशत बौद्ध धर्मावलम्बी तथा करीब 0.03 प्रतिशत अन्य धर्मों को मानने वाले लोग निवास करते हैं।[17]

आज भी यहाँ सामान्य रूप से बाल विवाह, नुक्ता प्रथा, पर्दा प्रथा, अंर्तजातीय, कठोरता आदि प्रचलित हैं। राजस्थान में आज भी सामाजिक विषमताएँ,

अथवा असमानताएँ, अमीरी–गरीबी, शहरी–ग्रामीण, अगड़े–पिछड़े, औद्योगिक–प्रौद्योगिक, कृषक–आधुनिक आधारो ंपर विभाजित हैं। राजनीतिक दल, नेता व प्रभावशाली व्यक्ति इस प्रकार के विभाजन का लाभ लेने में कभी नहीं हिचकिचाते। यहाँ शिक्षा विशेषतः महिला शिक्षा का प्रचार प्रसार न्यूनाधिक रूप से हुआ है। मगर यह सामाजिक चेतना नहीं दे सका है। यहाँ का समाज अभी भी पंथवादी, परम्परावादी, साम्प्रदायिक तत्वों के भंवर जाल में जी रहा है। वह सामाजिक जडता से अभी तक बाहर नहीं आ सका है।

राजस्थान की मूल भाषा राजस्थानी है। राजस्थान में प्रचलित बोलियों का जन्म नागरया शौरसेनी के अपभ्रंश से माना जाता है। जिनमें प्रमुख मारवाड़ी, मेवाड़ी, बागड़ी, ढूंढाढी, हाडौती, मेवाती, ब्रज, मालवी बरागड़ी बोलियाँ हैं।[18]

राजस्थान का समाज एक परम्परागत समाज माना जाता है। यहाँ के जनजीवन में सामाजिक संस्कारों, लोकोत्सवों, पर्वों, प्रथाओं रीति–रिवाजों, सांस्कृतिक उत्सवों एवं मेलों का महत्वपूर्ण स्थान है। राजस्थान में शैव, वैष्णव, शाक्य, रामभक्त आदि की प्रधानता रही है।

चित्रकला सभी क्षेत्रों में पनपी है किशनगढ़ की चित्रकला विश्वप्रसिद्ध है, मुगल शैली के चित्र जयपुर में मिनियेचर–लघु चित्र बनाए जाते हैं। पिछवाईयाँ नाथद्वारा व किशनगढ़ में बनती हैं, इनका अर्थ मंदिर देव मूर्ति के पीछे लगाना था।

शाहपुरा–भीलवाड़ा के फड़ चित्र लोक कथा को चित्रित करने के लिए जाने जाते हैं। संसार के अनेक म्यूजियमों में फड़ चित्र प्रदर्शित अथवा संग्रहित हैं। आदिवासियों में दीवारों तथा आंगन पर चित्र व माण्डने बनाने की परम्परा है। टोंक व सवाई माधोपुर जिले की मीणा महिलाएँ इस कार्य में माहिर हैं।

जयपुर में अनेक प्रकार की मूर्तियाँ बनती है। देश–विदेश के मंदिरों में देव–मूर्तियाँ जयपुर से बनकर जाती हैं। भूरे पत्थर की मूर्तियाँ डूंगरपुर में बनती हैं।

मोलेला गांव के कुम्हार बहुत सुन्दर टेराकोट्टा के टिकले बनाते हैं। उनके उभरे टिकले भी अनेक देशों में पहुँचे हैं।

ललित कलाओं में नृत्य के विभिन्न प्रकार प्रचलित हैं, शास्त्रीय नृत्यों में कत्थक नृत्य प्रमुख है। नगरों में इनको सीखने–सिखाने तथा प्रदर्शन के अवसर अधिक हैं। लोकनृत्यों में सामूहिक नृत्यों को महत्त्व दिया जाता है। विवाह तथा त्यौहारों के अवसर पर नृत्य किए जाते हैं। भवाई नृत्य, मटकी नृत्य, ताली नृत्य, डांडिया नृत्य किए जाते हैं। गरबा नृत्य भी यहाँ किया जाता है। रास व गवरी नृत्य अभिव्यक्ति के साधन हैं। लोकगीत नृत्य के साथ–साथ गाये जाते हैं। गणगौर व तीज के अवसर पर अनेक गीतों का प्रचलन है। वाद्यों में हारमोनियम प्रमुख हैं पर तबले, ढोलक, सारंगी, बांसुरी आदि बजाए जाते हैं।

राजस्थान की प्रत्येक रियासत तथा जागीर के राजा महाराजाओं व जागीरदारों ने अपने रहने तथा क्षेत्र की सुरक्षा के लिए महल व किले बनवाये। महलों की डिजाइन स्थानीय कारीगर करते थे। दरवाजे, झरोखे, छोटी खिड़कियाँ, दो तीन मंजिलें महल बनाए गए। जयपुर, कोटा, उदयपुर, अलवर, डूंगरपुर, जोधपुर व अन्य रियासतों के महल प्रसिद्ध हैं।

किले के साथ नगर को बचाने के लिए नगर के चारों ओर कोट दीवार व दरवाजे बनाए जाते थे। ये किले बहुत कलात्मक हैं। बड़ी रियासतों में, जयपुर, जोधपुर, कोटा, बूंदी, झालावाड़, उदयपुर, डूंगरपुर, चित्तौड़गढ़, जैसलमेर तथा नागौर व किशनगढ़ के किले ऐतिहासिक एवं कलात्मक महत्त्व रखते हैं। महल व किलों के साथ–साथ पानी एकत्रित करने के लिए झीलें व तालाब तथा बावडियाँ भी बनवाई जाती थी। जल संरक्षण की प्रथा राजस्थान में प्राचीन समय से हैं। राजस्थान में शेखावाटी की हवेलियाँ तथा उनकी संरचना तथा चित्रों के कारण विश्व प्रसिद्ध हैं।[19]

(4) जनसांख्यिकी स्थिति :

राजस्थान स्वतत्रंता के बाद लगभग 26 रियासतों से मिलकर बना है। राजस्थान की जनगणना स्वतंत्रता के बाद 1951 में हुई जिसमें जाति के आधार पर गणना समाप्त कर दी गई। जनसंख्या बढ़ती गई तथा स्त्री–पुरूषों के अनुपात में अंतर आता गया। राजस्थान की जनगणना 2011 की रिपोर्ट के अनुसार राजस्थान में कुल जनसंख्या 6,86,21012 है। जिसमें पुरूषों की संख्या–35,620,086 है। प्रति 1000 पुरूषों पर स्त्रियों का अनुपात 926 है। जनसंख्या घनत्व 201 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर है। राजस्थान में सर्वाधिक जनसंख्या वाले जिले क्रमशः जयपुर, 666397, जोधुपर–3685681, अलवर–3671999, नागौर–3309234 तथा न्यूनतम जनसंख्या वाला जिला जैसलमेर है। सर्वाधिक लिंगानुपात वाला जिला धौलपुर 1000 पुरूषों पर 845 स्त्रियाँ हैं। सर्वाधिक जनसंख्या वृद्धिदर वाला जिला बाड़मेर है। जबकि न्यूनतम वृद्धि दर गंगानगर में हैं।[20]

राजस्थान की जनसंख्या

वर्ष	जनसंख्या[21]	पुरूष	स्त्रियां	अनुपात प्रति 1000 पुरूषों पर स्त्रियाँ
1951	15971000	8313899	7657101	921
1961	20156000	10563941.29	9592058.70	908
1971	25765810	13482893.77	12282916.23	911
1981	34361860	179061128.19	16455731.81	919
1991	44005000	23039267.015	2096573.99	910
2001	565077188	29420011	2708777	922
2011	68621012	35620086	33000926	926

स्त्रोत : Census 2011

(5) शैक्षणिक स्थिति :

राजस्थान में प्राचीनकाल में शिक्षा उच्च कुलों तक ही सीमित थी। राजस्थान में शिक्षा विस्तार स्वतंत्रता के बाद हुआ लेकिन आदिवासी, पिछड़ी जातियों तथा महिलाओं में शिक्षा का प्रसार अब भी कम है। सर्वाधिक महिला साक्षरता वाला जिला कोटा 66.32 प्रतिशत है तथा न्यूनतम महिला साक्षरता वाला जिला झुन्झुनु 87.88 प्रतिशत है। पुरुष साक्षरता प्रतिशत 80.51 जबकि महिला साक्षरता प्रतिशत 52.66 है। हालांकि राजस्थान में पिछले 50 वर्षों में शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हुई है।

राजस्थान में साक्षरता दर

वर्ष	कुल (प्रतिशत) साक्षरता[22]	पुरूष (प्रतिशत)[23]	महिला(प्रतिशत)
1951	8.50	13.88	2.66
1961	18.12	28.08	7.01
1971	22.57	33.87	10.06
1981	30.11	44.87	14.0
1991	38.55	54.99	20.44
2001	61.03	76.46	44.34
2011	67.06	80.51	52.66

स्त्रोत : Census 2011

इससे स्पष्ट है कि पिछले 50 वर्षों में राजस्थान में साक्षरता का प्रतिशत 1951 में 8.50 प्रतिशत से बढ़कर 2011 में 67.06 प्रतिशत हो गया है। राजस्थान में 6 सरकारी विश्वविद्यालय तथा बिट्स पिलानी व वनस्थली विद्यापीठ है।[24] इसके अतिरिक्त हाल ही में अनेक महाविद्यालयों को विश्वविद्यालय का दर्जा दिया गया। राजस्थान में 163 महाविद्यालय, 5 मेडिकल महाविद्यालय, 5 आयुर्वेदिक संस्थान, 3

विधि महाविद्यालय, 403 संस्कृत शिक्षा संस्थाएँ, उप शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, 6 इंजीनियरिंग कॉलेज, 20 पॉलिटेकनिक कॉलेज तथा 157 राजकीय एवं निजी औद्योगिक संस्थान संचालित हैं।

(6) आर्थिक स्थिति :

भारत के अन्य प्रदेशों की तुलना में राजस्थान आर्थिक दृष्टि से काफी पिछड़ा माना जाता है। राजस्थान के पास खनिज एवं पशुधन तो है परन्तु उद्योग बहुत कम है। राजस्थान में जागीरदारी प्रथा के कारण भूमि स्वामित्व की स्थिति यहाँ के आर्थिक पिछड़ेपन का एक महत्वपूर्ण कारण माना गया है। इसी के कारण यहाँ भूमि सुधार विशेषकर खातेदारी अधिकार एवं हदबंदी कानून लागू किए गए। इसके बावजूद यहाँ भूमि वितरण की अत्यधिक असमानता देखने को मिलती है।[25] राजस्थान के आर्थिक विकास में कृषि की महत्वपूर्ण भूमिका है। कृषि शुद्ध राज्य घरेलू उत्पाद एवं नियोजन में राज्य की अर्थव्यवस्था के मेरूदण्ड की तरह है। यहाँ कृषि मानसून पर आधारित है जो प्रायः अपर्याप्त, अनिश्चित एवं अनियमित रहता है। जिस कारण से कृषि, पशु पालन प्रमुख व्यवहार होने पर भी सम्पन्नता प्रदान नहीं कर पाते। कृषि उत्पादन की दृष्टि से कोटा, श्रीगंगानगर, बूँदी, बांरा का कुछ हिस्सा भरतपुर, धौलपुर, बीकानेर का कुछ हिस्सा महत्वपूर्ण माना जाता है। गेहूँ, कपास तथा मोटे अनाज का भी संतोषजनक उत्पादन किया जा रहा है। राजस्थान के पास कृषि, खनिज एवं पशुधन है, किन्तु उद्योग बहुत कम हैं। यहाँ प्रमुखता उद्योग–खनिज, कृषि एवं टेक्सटाइल पर आधारित है। राजस्थान के खनिजों को अजायबघर कहा जाता है। क्योंकि यहाँ खनिजों का सम्पन्न एवं विपुल भण्डार है। देश में राज्य का खनिजों की दृष्टि से दूसरा स्थान है। राज्य में खनिजों की बहुलता है जिनमें सीसा, जस्ता, तांबा, टंगस्टन, चांदी, केडमियम, रॉक फास्फेट, जिप्सम, केलामाईट, सोपस्टोन, अभ्रक, पारराइटस, चीनी मिट्टी, कांच बनाने की बालू, चूने का पत्थर, मुलतानी मिट्टी आदि प्रमुख है।[26] किन्तु बिजली, पानी, सड़क, कुशल, कारीगरों, प्रशिक्षित कार्मिकों एवं दक्ष प्रबंधन की कमी के कारण राज्य का

औद्योगिक विकास काफी मंद गति से हुआ है। राज्य में बेरोजगारी की समस्या विकराल रही है। वर्ष 2001–2002 की आर्थिक समीक्षा के अनुसार 1999–2000 में राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में 19.85 प्रतिशत तथा मिश्रित रूप में गरीबी का अनुपात 15.28 प्रतिशत है।[27] किन्तु जब यह प्रदेश देश के औद्योगिक परिदृश्य में तेजी से उभर रहा है। राज्य के प्रमुख केन्द्रीय प्रतिष्ठानों में देबारी (उदयपुर) में जस्ता गलाने का संयंत्र, खेतड़ी(झुन्झुनू) में तांबा परियोजना और कोटा में सूक्ष्म उपकरणों का कारखाना शामिल हैं। मार्च, 2012 तक राज्य में लघु उद्योगों की 3.64 लाख इकाइयाँ थी जिनमें 15221.85 करोड़ रूपये की पूंजी लगी थी कि और लगभग 15. 89 लाख लोगों को रोजगार मिला हुआ था।

राजस्थान के प्रमुख उद्योग हैं, वस्त्र, ऊनी वस्त्र, उद्योग, गोटा उद्योग, चीनी, सीमेंट उद्योग, कांच, सोडियम संयंत्र, आक्सीजन, वनस्पति रंग, कीट नाशक, जस्ता, उर्वरक, रेल के डिब्बे, ऑल वियरिंग, पानी व बिजली के मीटर, टी.वी. सेट, सल्फ्यूरिक एसिड, सिंथेटिक धागे तथा तापरोधी ईटें आदि। बहुमूल्य एवं कम मूल्यों के रत्नों के अलावा कास्टिक सोड़ा, केल्शियम कार्बाइड, नाइलोन तथा टॉपर आदि अन्य महत्वपूर्ण औद्योगिक इकाइयां हैं। 79 प्रकार के खनिज राज्य में पाए जाते हैं। इनमें 58 तरह के खनिज राज्य में पैदा होते हैं। राज्य तेल और प्राकृतिक गैस भी पैदा करता है।

राजस्थान अनेक प्रकार की हस्तकलाओं के लिए जाना जाता हैं। कठपुतलियाँ बनाने तथा उसके द्वारा अमरसिंह की कथा कहने का प्रचलन पुराना है। सोने पर थेवा कला प्रतापगढ़ से देश–विदेश पहुँची है। सोने–चाँदी के गहने, कलात्मक प्रदर्शनीय वस्तुएँ बनाई जाती हैं। लकड़ी के खिलौने उदयपुर, लकड़ी का परम्परागत फर्नीचर जोधपुर में बनता है। बाड़मेर के कसीदे के काम के कपड़े महिलाओं के परिश्रम के परिणाम हैं। जयपुर बहुमूल्य लघु पत्थरों को तरासने, उनकी कलात्मक वस्तुओं बनाने के लिए जाना जाता। लाल, फिरोजा, बैंगनी, हरे रंग के बहुमूल्य पत्थर काम में लिए जाते हैं। हाथ से बने कपड़े व साड़ियाँ प्रसिद्ध हैं।

कैथून की साड़ियाँ हाथ से बुनकरों द्वारा बनाती जाती है जो डोरियाँ कहलाती है। गोटा किनारे के बिना साड़ियों की रंगत अधूरी रहेगी, जो भिनाय में बुनकरों द्वारा बनाई जाती है।

(7) बिजली :

राज्य में स्थापित बिजली क्षमता 31 मार्च, 2012 तक 12297.14 मेगावाट तक पहुँच गई, जिसमें 4207.35 मेगावाट राज्य की स्वयं की परियोजनाओं, 972.94 मेगावाट, समन्वित परियोजनाओं तथा 2290.47 मेगावाट केन्द्रीय विद्युत उत्पादन स्टेशनों से प्राप्त की गई। पवनसौर तथा जैविक परियोजनाओं से 2556.50 मेगावाट और 1460.00 मेगावाट निजी क्षेत्र की परियोजनाओं से प्राप्त हुई।

(8) परिवहन :

जोधपुर, जयपुर, बीकानेर, सवाई माधोपुर, कोटा, उदयपुर और भरतपुर राज्य के प्रमुख रेलवे जंक्शन हैं। मार्च, 2010 को राज्य में रेलवे लाइन की कुल लम्बाई 5784.16 कि.मी. है। जयपुर हवाई अड्डे से सभी प्रमुख शहर जुड़े हैं इनमें दिल्ली, मुम्बई, अहमदाबाद, कोलकत्ता, चैन्नई, हैदराबाद, बंगलौर, पुणे और गोवाहाटी के लिए नियमित विमान सेवाएँ हैं। दुबई मस्कट तथा शारजहाँ के लिए भी सेवा उपलब्ध हैं। मार्च, 2013 तक राजस्थान में सड़कों की कुल लम्बाई 1.90 लाख कि. मी. थी।[28]

(9) प्राकृतिक पर्यटन स्थल :

यूं तो राजस्थान का सम्पूर्ण भू–भाग ही पर्यटन स्थल है पर कुछ क्षेत्र एवं स्थान है जो प्रकृति के विशेष स्थान है जो पर्यटन के लिए जाने जाते हैं। मौसम के अनुसार क्षेत्रीय विशेषताएँ उभर कर आती हैं। यहाँ की नदियों सरस्वती, दृषद्वती, बनास, बेडच, आहड़, लूणी, कृष्णावती, खारी, दोहन आदि की उपत्यकारों में अनेक स्थान वर्षा ऋतु में पर्यटन स्थल बन जाते हैं।

अरावती पर्वत की अनेक शाखाओं में प्राकृतिक स्थान धार्मिक एवं ऐतिहासिक घटनाओं से पर्यटन के महत्त्वपूर्ण स्थान बन गए हैं। पुष्कर यद्यपि धार्मिक स्थान है पर ऐसा प्राकृतिक स्थान हैं। जहाँ पहाड़ एवं रेगिस्तान दोनों मिलते हैं। पर्यटकों के आवागन के साथ, बाजार भी पनप जाते हैं।

वन्य जीवों, मुख्य रूप से शेरों की सुरक्षा के लिए सवाई–माधोपुर जिले में रणथम्भौर तथा अलवर जिले में सरिस्का को सुरक्षित क्षेत्र घोषित किया गया है। भरतपुर के निकट घना क्षेत्र में सर्दी मौसम में देश–विदेशों से आने वाले पक्षियों के कलरव व उनकी हलचल को सुना व देखा जा सकता है। ये पक्षी बर्फीले प्रदेशों से हजारों मीलों दूर से उड़कर यहाँ प्रजनन हेतु आते हैं तथा पुनः सर्दी समाप्त होने पर फरवरी माह में लौट जाते हैं।

प्रत्येक जिले में कोई न कोई प्राकृतिक स्थल हैं पर माउण्ड आबू गर्मी के मौसम के लिए उपयुक्त हैं क्योंकि वहाँ पहाड़ पर झील है तथा अनेक प्राकृतिक स्थल देखने योग्य हैं। उदयपुर झीलों की नगरी के रूप में जाना जाता है। यहाँ पिछोला तथा उदयसागर तथा बड़ी का तालाब है। सभी बड़े नगरों के आस–पास पानी को रोक कर झीलें बनाई हैं। यहाँ का रेगिस्तान भी देखने लायक है। यह मरूस्थल में फैला हुआ है। डूंगरपुर, बांसवाड़ा, चित्तौड़गढ़ तथा प्रतापगढ़ के पठार एवं पहाड़ प्राकृतिक आकर्षण के स्थान है।[29]

(10) प्रशासनिक ढांचा :

संपूर्ण राजस्थान को प्रशासनिक सुविधा की दृष्टि से वर्तमान में 33 जिलों 973 उपखण्डों और 229 तहसीलों में विभक्त किया गया है। देश की लोकतांत्रिक प्रणाली की भांति राजस्थान में भी प्रशासन की बागडोर निर्वाचित सरकार के हाथों में है। राज्यपाल उसका अध्यक्ष है जो मंत्रिपरिषद् की सलाह के अनुसार कार्य करता है। प्रशासन कार्य को सुचारू रूप से करने हेतु लोकतांत्रिक पद्धति में सरकार के तीन अभिन्न अंग होते हैं, वे हैं–कार्यपालिका विधानसभा तथा न्यायपालिका।

प्रजातांत्रिक विकेन्द्रीकरण की दृष्टि से 50,000 से अधिक आबादी वाले नगरों में नगर परिषद्, 8000 से अधिक आबादी वाले कस्बों में नगर पालिकाएँ तथा 8000 से कम आबादी वाले ग्रामों में ग्राम पंचायत बनाई गई हैं। देश में सबसे पहले 2 अक्टूबर, 1959 को राजस्थान में पंचायतीराज व्यवस्था प्रारंभ की गई। राजस्थान में पंचायती राजव्यवस्था का ढांचा त्रि–स्तरीय है। इस समय राजस्थान में 33 जिले 295 पंचायत समितियाँ व 9894 ग्राम पंचायतें हैं व 7 नगर निगम है।[30]

राजनीतिक स्थिति :

राजस्थान प्राचीन काल में अनेक रजवाड़ों में विभक्त था जिनमें पैतृक राजतंत्र प्रचलित था तथा अधिकांश सत्ता राजपूतों के हाथ में थी। अंग्रेजों के काल में यही स्थिति प्रचलित रही परन्तु इन राजाओं ने अंग्रेजों की अधीनता स्वीकार कर ली। भारत के स्वाधीनता संग्राम में राजस्थान के नसीराबाद, नीमच, देवली, ऐरनपुरा आदि स्थानों पर तैनात भारतीय सैन्य टुकडियों ने हिस्सा लिया, राजस्थान के सामूहिक जनाक्रोश का यह पहला विस्फोट था। जिसका नेतृत्व जयपुर के अर्जुन लाल सेठी, कोटा के केसरी सिंह बारहठ, रवाके ठाकुर गोपाल सिंह, भूपसिंह, ब्यावर के सेठ दामोदर राठी कर रहे थे।[31]

राजनीतिक दृष्टि से यह एक रियासती राज्य था। ऐतिहासिक विरासत के रूप में राजस्थान राज्य को एक सामंती समाज मिला। स्वाधीनता पूर्व यह 9 देशी रियासतों, 2 ठिकानों और अजमेर के केन्द्र शासित प्रदेशें में विभक्त था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद वर्तमान राजस्थन के निर्माण की प्रक्रिया मुख्तः चार चरणों–मत्स्य संघ, राजस्थान संघ, संयुक्त राजस्थान, तथा वृहत राजस्थान के रूप में (1948–1956) के बीच आठ वर्षों में सम्पन्न हुई। राजस्थान को वर्तमान स्वरूप अजमेर विलय के बाद 1 नवम्बर, 1956 को प्राप्त हुआ। राजनीतिक एकीकरण के बाद यह राज्य न केवल लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण को प्रारंभ करने वाला प्रथम राज्य बना वरन् 73वें एवं 74वें संविधान संशोधन को लागू करने वाला अग्रणी राज्य भी रहा है। यही नहीं, लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण, अन्तयोदय, अकाल प्रबंधन, सूचना का

अधिकार आदि राजस्थान के राष्ट्रीय राजनीति के लोकतांत्रिक इतिहास का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

राजस्थान में प्रथम विधानसभा चुनाव 1951 में हुए। जिसमें 160 सीटों में 7 पर निर्विरोध निर्वाचन हुआ और 153 सीटों के लिए 32 लाख 61 हजार 442 मतदाताओं ने मतदान किया जो कुल मतदाताओं का मात्र 42.40 प्रतिशत था। इसमें कांग्रेस, राजस्थान परिषद, हिन्दू महासभा, भारतीय जनसंघ, कृषक मजदूर प्रजा पार्टी आदि मुख्य दल थे। इनमें कांग्रेस सत्ता में आई और टीकाराम पालीवाल मुख्यमंत्री बने। द्वितीय विधानसभा चुनाव 1957 को हुआ। इसमें 176 सीटों में से 5 पर निर्विरोध निर्वाचन हुआ और 171 सीटों के लिए 47 लाख 46 हजार 458 मतदाताओं ने मतदान किया जो कुल मतदाताओं का लगभग 54 प्रतिशत था। इसमें कांग्रेस, हिन्दूमहासभा, भारतीय जनसंघ, कृषक मजदूर प्रजापार्टी आदि प्रमुख दल थे। इसमें सबसे अधिक 45.15 प्रतिशत मत कांग्रेस 933.93 प्रतिशत मत निर्दलीयों ने प्राप्त किए। इसमें भी कांग्रेस सत्ता में आई और मोहन लाल सुखाड़िया मुख्यमंत्री बने। 1962 में तृतीय विधानसभा चुनाव हुए इसमें 54 लाख 4 हजार 690 मतदाताओं ने मतदान किया जो कि कुल मतदाताओं का 52 प्रतिशत था। तीसरी बार कांग्रेस पार्टी पुनः सत्ता में आई और मोहन लाल सुखाडिया पुनः मुख्यमंत्री बने। इसमें कांग्रेस, भारतीय जनसंघ, रामराज्य परिषद व स्वतंत्र पार्टी आदि प्रमुख दल थे। इस बार भी कांग्रेस पार्टी सत्ता में आई और मोहन लाल सुखाडिया पुनः मुख्यमंत्री बने। 1972 में पांचवा विधानसभा चुनाव हुआ जिसमें 184 सीटों में से एक पर कांग्रेस प्रत्यासी निर्विरोध निर्वाचित हुआ। 183 सीटों के लिए 80 लाख 35 हजार 28 मतदाताओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया जो कुल मतदाताओं का 58 प्रतिशत था। इसमें कांग्रेस, भारतीय जनसंघ व स्वतंत्र पार्टी प्रमुख दल के रूप में चुनाव मैदान में थे। इस बार भी कांग्रेस सत्ता में आई और बरकत उल्ला खाँ मुख्यमंत्री बनाए गए। 1977 में छटा विधानसभा चुनाव हुआ। जिसमें 200 सीटों के लिए 84लाख 33 हजार 672 मतदाताओं ने मताधिकार का प्रयोग किया जो कुल मतदाताओं का 54.43 प्रतिशत

था। इस चुनाव में कांग्रेस व जनता पार्टी प्रमुख दल के रूप में थे। इस बार जनता पार्टी को सबसे अधिक स्थान मिले और वह सत्ता में आई और उन्होंने अपने नेता भैरोंसिंह शेखावत को मुख्यमंत्री बनाया। 1980 में सातवीं बार विधानसभा चुनाव हुए जिसमें 84 लाख 21 हजार 970 मतदाताओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया जो कुल मतदाताओं का 51 प्रतिशत था। इस बार कांग्रेस(ई) कांग्रेस (अर्स), भारतीय जनता पार्टी व जनता दल प्रमुख दलों के रूप में चुनाव मैदान में थे। इस बार कांग्रेस सत्ता में आई और जगन्नाथ पहाडिया को मुख्यमंत्री बनाया गया। 1985 में आठवी विधानसभा चुनाव हुए इसमें 1 करोड 16 लाख 60 हजार 502 मतदाताओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया जो कुल मतदाताओं का 55 प्रतिशत था। इस चुनाव में कांग्रेस(ई) भारतीय जनता पार्टी, लोक दल प्रमुख थे। इस बार भी कांग्रेस सत्ता में आई और हरिदेव जोशी को मुख्यमंत्री पद की शपथ दिलाई गई। 1990 में नवीं बार विधानसभा चुनाव हुए इसमें 1 करोड 50 लाख 73 हजार 788 मतदाताओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया जो कुल मतदाताओं का 57 प्रतिशत था। इस बार भारतीय जनता पार्टी सत्ता में आई और भैरोंसिंह शेखावत को मुख्यमंत्री बनाया गया। दसवें विधानसभा चुनाव 1993 में हुए जिसमें 1 करोड 71 लाख 725 मतदाताओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया जो कुल मतदाताओं का 60.58 प्रतिशत था। इसमें भारतीय जनता पार्टी, कांग्रेस, भाकपा, जनता दल प्रमुख दल थे। इस बार पुनः भारतीय जनता पार्टी सत्ता में आई और भैरोंसिंह शेखावत को मुख्यमंत्री बने। ग्यारहवें विधानसभा चुनाव 1998 में हुए जिसमें 1 करोड 91 लाख 906 मतदाताओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया जो कुल मतदाताओं का 63.38 प्रतिशत था। इस चुनाव में कांग्रेस व भाजपा प्रमुख दल के रूप में मैदान में थे।

इस बार कांग्रेस सत्ता में आई और अशोक गहलोत को मुख्यमंत्री बनाया गया। बारहवें विधानसभा चुनाव, 2003 में हुए जिसमें 2 करोड 27 लाख 94 हजार 915 मतदाताओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया जो कुल मतदाताओं का 67 प्रतिशत था। इस चुनाव में कांग्रेस, भाजपा व बहुजन समाज पार्टी प्रमुख दल के

रूप में मैदान में थे। इस बार सत्ता में भाजपा आई और उसने वसुंधरा राजे को मुख्यमंत्री बनाया। तेरहवें विधानसभा चुनाव, 2008 में हुए जिसमें 2 करोड़ 43 लाख 2 हजार 747 मतदाताओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया जो कुल मतदाताओं का 67 प्रतिशत था। इस चुनाव में कांग्रेस व भाजपा प्रमुख दल के रूप में मैदान में थे। इस बार कांग्रेस सत्ता में आई और अशोक गहलोत को मुख्यमंत्री बनाया गया। चौदहवें विधानसभा चुनाव 2014 में सम्पन्न हुए। इस चुनावों कांग्रेस, भाजपा प्रमुख दल के रूप में मैदान में थे। इस बार भाजपा सत्ता में आई और वसुंधरा राजे को मुख्यमंत्री बनाया गया।[32]

राजस्थान से संसद (निम्न सदन–लोकसभा) में महिला नेतृत्व

क्रसं.	वर्ष	राजस्थान से लोकसभा के लिए कुल प्रतिनिधि	पुरूष प्रतिनिधि	प्रतिशत	महिला प्रतिनिधि	प्रतिशत
1	1952	22	22	100	0	0
2	1957	22	22	100	0	0
3	1962	23	22	95.5	1	4.5
4	1967	23	22	95.5	1	4.5
5	1971	24	22	91.4	2	8.6
6	1977	25	25	100	0	0
7	1980	25	24	96	1	4.5
8	1984	25	23	92	2	8
9	1989	25	24	96	1	4
10	1991	25	21	84	4	16
11	1996	25	21	84	4	16
12	1998	25	22	85	3	12
13	1999	25	21	84	4	16
14	2004	25	23	92	2	8
15	2009	25	23	92	2	8
16	2014	25	24	96	1	4
औसत प्रतिशत		**24.26**	**22.46**	**92.7**	**1.8**	**7.29**

स्त्रोत : http://www.parliamentogindia.nic.in

सारणी से स्पष्ट होता है कि संघीय विधायिका के निम्न सदन लोकसभा में राजस्थान से महिला नेतृत्व अधिकतम 16 प्रतिशत रहा है जो 1991, 1996 तथा 1999 में लोकसभा में देख जा सकता है। वहीं सबसे कम 4.0 प्रतिशत 1980 तथ 1989 में रहा तथा 1952, 1957 एवं 1997

में शून्य ही रहा। 1962, 1967 में क्रमशः 4.5 प्रतिशत रहा है। 1971, 1984, 2004 तथा 2009 में 8 प्रतिशत रहा वहीं 1998 में 12 प्रतिशत रहा है। अब तक हुए 15 लोकसभा चुनावों में औसत महिला नेतृत्व 7.29 प्रतिशत रहा है। जो महिला नेतृत्व नगण्यता को भी दर्शाता है। यही स्थिति राज्य विधायिकों एवं राजस्थान विधायिका में भी है।

राजस्थान से संसद (उच्च सदन–राज्यसभा) में महिला नेतृत्व

क्रसं.	वर्ष	राजस्थान से राज्यसभा के लिए कुल प्रतिनिधि	पुरूष प्रतिनिधि	प्रतिशत	पुरूष प्रतिनिधि	प्रतिशत
1	1952	10	9	90	1	10
2	1954	3	3	100	0	0
3	1956	4	3	75	1	25
4	1958	4	4	100	0	0
5	1960	3	3	100	0	0
6	1962	4	3	75	1	25
7	1964	5	5	100	0	0
8	1966	6	5	83.33	1	16.37
9	1968	5	5	100	0	0
10	1970	3	2	66.67	1	33.33
11	1972	3	2	66.67	1	33.33
12	1974	4	4	100	0	0
13	1976	3	2	66.67	1	33.33
14	1978	3	3	100	0	0
15	1980	4	4	100	0	0

16	1982	3	3	100	0	0
17	1984	5	5	100	0	0
18	1986	4	4	100	0	0
19	1988	3	3	100	0	0
20	1990	4	4	100	0	0
21	1992	4	4	100	0	0
22	1996	4	4	100	0	0
23	1998	4	4	100	0	0
24	2000	3	2	66.67	1	33.33
25	2002	3	2	66.67	1	33.33
26	2004	5	4	80	1	20.00
27	2009	3	3	100	0	0

स्त्रोत : http://www.india.dection.com

सारणी से स्पष्ट होता है कि संघीय विधायिका के उच्च सदन राज्यसभा में राजस्थान से 2009 में महिला नेतृत्व नगण्य रहा है। वहीं 1952 से 2009 तक के आंकड़ों पर दृष्टिपात डाले तो महिलाओं के नेतृत्व के संबंध अधिकांशतः नेतृत्व शून्य रहा है। 1958 तथा 1964 में 25 प्रतिशत तथा अधिकतम 1972, 1974, 1976, 2000 तथा 2002 में 33.33 प्रतिशत रहा इसके अलावा इससे कम या नगण्य रहा है। अतः स्पष्ट होता है कि महिला नेतृत्व के आधार पर राजस्थान की स्थिति राज्यसभा में शोचनीय रही है। जो कम और अधिक लोकसभा में भी बनी हुई है।

राजस्थान विधानसभा में महिला नेतृत्व

क्रसं.	विधानसभा	कुल सदस्य	पुरूष	प्रतिशत	महिला	प्रतिशत
1	प्रथम विधानसभा	160	159	98.75	1	1.25
2	द्वितीय विधानसभा	176	167	94.99	9	5.1
3	तृतीय विधानसभा	184	176	95.7	8	4.3
4	चतुर्थ विधानसभा	181	175	96.7	6	3.3
5	पंचम विधानसभा	183	170	92.9	13	7.1
6	षष्ठम विधानसभा	200	192	96	8	4
7	सप्तम विधानसभा	200	190	95	10	5
8	अष्ठम विधानसभा	200	185	92.5	15	7.5
9	नवीं विधानसभा	200	188	94	12	6
10	दसवीं विधानसभा	200	189	94.5	11	5.5
11	ग्यारहवीं विधानसभा	200	185	92.5	15	7.5
12	बारहवीं विधानसभा	200	188	94	12	6
13	तेरहवीं विधानसभा	200	172	86	28	14
14	चौदहवीं विधानसभा	200	175	87.5	25	12.5
औसत प्रतिशत		**176**	**179.6**	**94.11**	**11.38**	**5.89**

सारणी से स्पष्ट होता है कि राजस्थान विधायिका में भी राजस्थान की महिलाओं के नेतृत्व की शुरूआत विधायिका के समान निराशाजनक रही। 1952 में हुए प्रथम विधानसभा चुनावों में एक भी महिला विधायक नहीं थी। द्वितीय चुनाव 1957 में पांच वर्ष के राजनीतिक अनुभव शिक्षा के विस्तार ने महिलाओं के लिए राज्य के राजनीतिक क्षेत्र में धरातल तैयार किया तथा इस चुनाव में 176 सदस्यों वाली विधानसभा में 167 पुरूष तथा 9 महिलाएँ चुनकर आई जो कुल सदस्यों का 5.1 प्रतिशत था। 1962 में यह प्रतिशत घटकर 4.3 प्रतिशत तथा 1967 की चौथी

विधानसभा में यह 3.3 प्रतिशत रह गया। 1972 की पांचवीं विधानसभा में महिला नेतृत्व में वृद्धि हुई जो 7.1 प्रतिशत हो गई। छठी तथा सातवी विधानसभा में यह प्रतिशत पुनः कम हुआ जो क्रमशः 4.0 प्रतिशत हुआ जो वृद्धि को दर्शाता है जो कि तेरहवीं विधानसभा में सर्वाधिक उतार–चढ़ाव रखते हुए 14 प्रतिशत हो गया।

राजस्थान विधायिका महिला नेतृत्व की दृष्टि से औसत प्रतिशत के आधार पर 6 प्रतिशत का ही आंकड़ा छू पायी परन्तु बारहवीं विधानसभा में तीनों महत्वपूर्ण पदों (राज्यपाल–श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल, मुख्यमंत्री–श्रीमती वसुंधरा राजे तथा विधानसभा अध्यक्ष–श्रीमती सुमित्रा सिंह) पर महिला नेतृत्व होने के कारण विशिष्ट एवं कीर्तिमान स्थापित करने वाली रही। इसी का ही परिणाम है कि तेरहवीं एवं चौदहवीं विधानसभा में महिला नेतृत्व दुगने से भी अधिक हो गया। वर्तमान में भी राजस्थान विधानसभा में महिला नेतृत्व की ही भागीदारी है।

राजस्थान सरकार में राजस्थान ने पंचायती राज से संबंधित पूर्व के अधिनियमों (अधिनियम 1953 तथा 1959) को निरस्त कर 73वें संविधान संशोधन, 1994, 23 अप्रेल, 1944 में लागू किया। इसमें न केवल पंचायती राज संस्थाओं को व्यवस्थित संरचनात्मक आधार प्रदान किया गया वरन् निश्चित समय पर चुनाव तथा आर्थिक शक्तियाँ देकर शक्ति सम्पन्न किया। वहीं महिलाओं को (पंचायती राज) 2008 में संशोधन कर 33 प्रतिशत आरक्षण से 50 प्रतिशत प्रदान कर महिला नेतृत्व को बढ़ा दिया गया। राजस्थान पंचायती राज संस्थाओं के चार चुनाव 1995, 2000, 2005, 2010, 2015 सम्पन्न हो चुके हैं। राजस्थान के इतिहास में पहला अवसर था कि हाँसिये पर रही ये महिलाएँ आरक्षण के माध्यम से राजनीतिक नेतृत्व द्वारा राजनीतिक व्यवस्था की सत्तात्मक धारा में सम्मिलित हुई।

अजमेर जिला : एक परिचय

अजमेर जिला एक दृष्टि में[33]

क्र. सं.	मद		इकाई	सन्दर्भ अवधि	विवरण
1.		भौगोलिक स्थिति			
	(अ)	क्षेत्रफल	वर्ग किमी.	2011	8481
	(ब)	स्थिति –	उत्तरी अक्षांश	26°16 26°27	
	(स)	उच्चतम शिखर (तारागढ़ किला) की समुद्र तल से ऊँचाई	मीटर	2011	870
2.		जनसंख्या			
	(i)	पुरुष	संख्या	2011	1324085
	(ii)	स्त्री	संख्या	2011	1258967
	(iii)	योग	संख्या	2011	2583052
		(अ) ग्रामीण	संख्या	2011	1547642
		– पुरुष	संख्या	2011	789397
		– स्त्री	संख्या	2011	758245
		(ब) शहरी	संख्या	2011	1035410
		– पुरुष	संख्या	2011	534688
		– स्त्री	संख्या	2011	500722
	(iv)	परिवारों की संख्या	संख्या	2011	494832
		(अ) ग्रामीण	संख्या	2011	293744
		(ब) शहरी	संख्या	2011	201088
	(v)	जनसंख्या घनत्व	प्र. वर्ग किमी.	2011	305
	(vi)	कुल साक्षरता दर	प्रतिशत	2011	59.10
		(अ) पुरुष	प्रतिशत	2011	69.95
		(ब) स्त्री	प्रतिशत	2011	47.69
	(vii)	कुल जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या	प्रतिशत	2011	40.08

	(viii)	1000 पुरुष पर महिला	संख्या	2011	950
	(ix)	अनुसूचित जाति	संख्या	2011	478027
		(अ) ग्रामीण	संख्या	2011	256646
		(ब) शहरी	संख्या	2011	221381
	(x)	अनुसूचित जनजाति	संख्या	2011	63482
		(अ) ग्रामीण	संख्या	2011	48564
		(ब) शहरी	संख्या	2011	14918
	(xi)	वृद्धि दर	प्रतिशत	2011	26.16
		जनसंख्या की 10 वर्षीय (2001–2011)	प्रतिशत	2011	18.66

जगतपिता ब्रह्मा की यज्ञस्थली तीर्थराज पुष्कर और महान् सूफी संत ख्वाजामोईनुद्दीन हसन चिश्ती की दरगाह की वजह से दुनियाभर में विख्यात अजमेर अपनी विशिष्ट मिलीजुली संस्कृति व साम्प्रदायिक सौहार्द के लिए जाना जाता है। राजस्थान का हृदय स्थल अजमेर विशिष्टकाल से ही प्रशासनिक आधार पर प्रेसीडेंसी होने के कारण अपना विशिष्ट स्थान रखता है। इसका सांस्कृतिक, सामाजिक व आर्थिक इतिहास गौरवपूर्ण रहा है। यद्यपि इतिहास में इसकी स्थापना की तिथि के बारे में कोई स्पष्ट उल्लेख नहीं है, लेकिन ज्ञात तथ्यों के आधार पर माना जाता है कि इसकी स्थापना सातवीं शताब्दी में पृथ्वीराज चौहान के प्रथम पुत्र अजयराज चौहान द्वारा की गई थी।[34] राजा अजयराज ने सातवीं सदी ई. में इस नगर की स्थापना की। यह शहर राजस्थान के केन्द्र में स्थित प्रांत का 5वां सबसे बड़ा शहर है। प्रारंभ में यह अजयमेरू कहलाता था, जो कालांतर में अजमेर कहलाया। अजमेर जिले का नामकरण जिला मुख्यालय अजमेर के नाम पर हुआ है। अजमेर नगर का पुराना नाम अजयमेरू है। अजय का अर्थ होता है जिसे जीता न जा सके। मेरू का अर्थ होता है पर्वत। अजमेर का प्राचीन दुर्ग तारागढ़ तथा बीठली दुर्ग के नाम से प्रसिद्ध है। यह एक ऊँचे पर्वत पर स्थित है इसे जीता जाना वास्तव

में बहुत दुष्कर कार्य है अतः इसी पर्वत के कारण इस नगर का नाम अजमेरू हुआ।[35]

कुछ इतिहासकार 12वीं शती के चौहान राजा अजयराज द्वारा अजमेर नगर की स्थापना किए जाने के कारण इस नगर का नाम अजमेर बताते हैं। कुछ इतिहासकार मानते हैं कि चौहान पूर्ण तला के उत्तराधिकारी राजा जयराज अथवा जयपाल ने सातवी शताब्दी में अजमेर नगर की स्थापना की। स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व अजमेर तथा मेरवाड़ा नामक दो जिले ब्रिटिश राज्य के अधीन सीधे केन्द्र शासित प्रदेश के रूप में विद्यमान थे। 1956 तक भी अजमेर मेरवाड़ा केन्द्र शासित प्रदेश के रूप में रहा किन्तु इसके बाद अजमेर को एक अलग जिला बनाकर उसे राजस्थान प्रदेश में सम्मिलित कर लिया गया। जयपुर जिले का किशनगढ़ भी इस नवीन जिले में शामिल किया गया तथा दो वर्ष बाद देवली कस्बा और उसके पास के तीन गांव टोंक जिले को स्थानांतरित कर दिए गए।[36]

(1) अजमेर जिले की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

अजमेर तथा पुष्कर के आसपास की पहाड़ियाँ भारत की सबसे प्राचीन पहाड़ियाँ हैं। अजमेर के निकट खेड़ा तथा कडेरी से मानव सभ्यता के उषाकाल के मानव अवशेष प्राप्त हुए हैं। सिन्धु घाटी सभ्यता में बाट के रूप में सीसे तथा सफेद–काले अभ्रक के टुकड़े प्रयुक्त होते थे। वे टुकड़े इन्हीं पहाड़ों से ले जाए जाते थे। सिन्धु सभ्यता में प्राप्त छोटे–छोटे आकार की तश्तरियाँ, साहुल–गोलक तथा स्वर्णरजत निर्मित वस्तुएँ जो मानव सभ्यता के आरम्भिक काल में पाई गई थी, संभव है कि वे अजमेर से लाई गई।[37]

सिकन्दर के आक्रमण ने और उसके बाद सीथियनों के निरंतर हुए आक्रमणों ने मालव जाति को ऊपरी पंजाब में राजस्थान में आ जाने को विवश किया। मालव जाति ने जयपुर तथा टोंक के आसपास अपना अधिकार जमा लिया तथा टोंक से लगभग 40 किलोमीटर दूर ककोर्ट नगर में अपनी राजधानी स्थापित की। प्रथम

शताब्दी ई. के अंत तक उन्होंने अपना स्वतंत्र गणराज्य स्थापित कर लिया। पुष्कर से पंचमार्क के सिक्के मिले हैं जो चौथी शताब्दी ई. पूर्व में पुष्कर की समृद्धि की कहानी कहते हैं। पुष्कर से बैक्ट्रियन, यूनानी, शक, क्षत्रप तथा गुप्त शासकों के सोने व चांदी के सिक्के तथा तांबे के गधैया सिक्के बड़ी संख्या में प्राप्त हुए हैं। छठी शताब्दी ई. के आसपास चौहानों का उदय हुआ और उन्होंने सांभर के आसपास अपनी शक्ति बढ़ाई। चौहान शासकों में वासुदेव पहला शासक था जिसने 551 ई. में सपादलक्ष (सांभर) में शासन किया। उसके वंशज प्रतिहार शासकों के अधीन रह कर राज्य करते थे किन्तु ईसा की ग्यारहवीं शताब्दी के आसपास उन्होंने आप को प्रतिहारों से स्वतंत्र कर लिया। 1113ई. के लगभग चौहान अजयराज ने अजमेर को अपनी राजधानी बनाया। यहाँ पर सातवीं से बारहवीं शताब्दी तक चौहान शासकों का श्रृंखलाबद्ध राज्य रहा। अजयराज ने उज्जैन के नखर्मच को अंवती नदी पर हराकर अपने राज्य की सीमा मालवा तक कर ली थी। उन्होंने गजनवी की सेनाओं से भी कड़ा मुकाबला कर विजय हासिल की। अजयराज ने ही तारागढ़ का निर्माण करवाया था। जीवन के आखिरी पड़ाव में उन्होंने अपने पुत्र अरणोराज को सिंहासन सौंप दिया और स्वयं सन्यास धारण कर पुष्करारण्य में जीवन बिताया।[38]

अरणोराज ने भी बहादुरी का परिचय दिया और लाहौर व गजनी की यमन सेना के आक्रमण का मुकाबला कर राज्य की सीमाएँ बढ़ाई। अंततः 1150ई. में कुमार पाल ने उसे परास्त कर दिया। बाद में उनके ही पुत्र जगदेव ने हत्या कर राज्य पर कब्जा कर लिया। जगदेव का भी वही हश्र हुआ और उनके छोटे भाई विग्रहराज चतुर्थ (बीसलदेव) ने उन्हें मार डाला। विग्रहराव चतुर्थ ने तौमरों से मुकाबला कर दिल्ली पर कब्जा कर लिया। यह चौहानों का स्वर्णिम काल था। चौहान काल के अन्नाजी ने आनासागर झील का निर्माण कराया। बीसलदेव की मृत्यु के बाद उस का पुत्र अमरगंगेय अथवा अपर गंगेय अजमेर की गद्दी पर बैठा। वह मात्र 6 वर्ष ही शासन कर सका और अपने चचेरे भाई पृथ्वीराज द्वितीय (जगदेव का पुत्र था) द्वारा हटा दिया गया। पृथ्वीराज द्वितीय के निःसंतान मरने पर

अर्णोराज के एकमात्र जीवित पुत्र सोमेश्वर को अजमेर की गद्दी पर बैठाया गया। सोमेश्वर चौलुक्य राजा जयसिंह सिद्धराज की पुत्री कंचन देवी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। जो अर्णोराज की रानी थी। चौहानों के अंतिम शासक पृथ्वीराज चौहान थे। इतिहास प्रसिद्ध कवि चंदवरदायी ने अपने ग्रंथ पृथ्वीराज रासो में उसका वर्णन किया है।[39] वे अजयमेरू के संस्थापक महाराजा अजयराय व मुद्रा महिषी सौमल देवी के प्रपौत्र, सोमेश्वर चौहान व कर्पूर देवी के पुत्र थे। उनका जन्म 1166 ई.वी. में हुआ। उसके अल्प वयस्क होने के कारण उसकी माता कर्पूर देवी अजमेर का शासन चलाने लगी। कर्पूर देवी दिल्ली के राजा अनंगपाल की पुत्री थी। अनंगपाल के कोई लड़का न था अतः अनंगपाल (तोमर ने दिल्ली का राज्य भी पृथ्वीराज चौहान को दे दिया। अनंगपाल की दूसरी पुत्री का विवाह कन्नौज के राजा विजयपाल से हुआ था। जिसका पुत्र जयचन्द्र हुआ।) इस प्रकार पृथ्वीराज चौहान (तृतीय) तथा जयचन्द मौसेरे भाई थे। जब अनंगपाल ने पृथ्वीराज को दिल्ली का राज्य देने की घोषणा की तो जयचन्द पृथ्वीराज का शत्रु हो गया और उसे नीचा दिखाने के अवसर तलाशने लगा मथुरा, भरतपुर तथा अलवर क्षेत्र में रहने वाले भण्डारन को ने जब विद्रोह किया तो पृथ्वीराज ने बड़ी कुशलता से उनका दमन किया। उसने चन्देल राजा पारमारदी को बुरी तरह से परास्त करके उसका राज्य छीन लिया। लोक गाथाओं के सुप्रसिद्ध नायक आल्हा व ऊदल इसी युद्ध में मारे गए थे जो परमारदी की तरफ से लड़े थे। पृथ्वीराज ने चालुक्य भीमदेव द्वितीय तथा प्रतिहास जगदेव का डटकर मुकाबला किया तथा उनसे हार नहीं मानी। अपने सभी पड़ोसियों गुजरात, बुंदेलखण्ड, हरियाणा, दिल्ली, पूर्वी पंजाब को स्वीकार कर उनकी अधीनता स्वीकार करने को बाध्य किया।

पृथ्वीराज ने कन्नौज नरेश जयचंद की पुत्री संयोगिता (अपनी प्रेमिका) का हरण कर अजयमेरू दुर्ग में राज रानी बनाया। प्रेम, बलिदान और शौर्य की इस अथक गाथा को पृथ्वीराज रासो नामक ग्रंथ में कवि चन्दबरदायी ने बहुत ही सुंदर विधि से अंकित किया है। वह वीर कुल शिरोमणि, विद्यानुरागी, विद्वानों का

आश्रयदाता तथा प्रेम में प्राणों की बाजी लगा देने वाला था। उसकी उज्जवल कीर्ति भारतीय इतिहास के गगन में ध्रुव नक्षत्र की भांति दैदीप्यमान है। आज एक हजार साल बाद भी वह कोटि–कोटि हिन्दुओं के हृदय का सम्राट है। उसे अंतिम हिन्दू सम्राट कहा जाता है। उसके बाद इतना पराक्रमी हिन्दू राजा इस धरती पर नहीं हुआ। उन्होंने तुर्क मौहम्मद गौरी को 1191 में तराइन के प्रथम युद्ध में पराजित किया। किन्तु सन् 1192 में मौहम्मद गौरी ने तराइन के दूसरे युद्ध में उनको हरा दिया व पृथ्वी राज को पकड़कर अजमेर अथवा गौर ले जाया गया जहाँ उसकी आँखें फोड़ दी गई। पृथ्वीराज का बाल सख और दरबारी कवि चन्द बरदाई भी उसके साथ था। कवि चन्दबरदाई ने गौरी से निवेदन किया कि आँखें फूट जाने पर भी राजा पृथ्वीराज शब्द भेदी निशाना साधकर लक्ष्य भेध सकता है। कवि चन्दबरदाई ने यह दोहा पढ़ा–

चार बांस चौबीस गज, अंगुल अष्ठ प्रमाण
ता ऊपर सुल्तान है, मत चूके चौहान।

गौरी की स्थिति का आकलन करके पृथ्वीराज ने तीर छोड़ा जो गौरी के कण्ठ में जाकर लगा और उसी क्षण उसके प्राण पखेरू उड़ गए। जब पृथ्वीराज चौहान की मृत्यु हुई तब उनकी उम्र मात्र 26 वर्ष थी। वे अंतिम हिन्दू शासक थे जिन्होंने तुर्क आक्रमणकारियों को आठ वर्ष तक रोके रखा। इसके बाद अजमेर मुसलमानों की गतिविधियों का केन्द्र बन गया। दस साल में पूरा उत्तर भारत ही तुर्क सत्ता के सम्मुख नतमस्तक हो गया। मौहम्मद गौरी ने अजमेर पर मुस्लिम शासन स्थापित करने की जिम्मेदारी कुतुबद्दीन ऐबक को सौंपी और वह आसपास के इलाके में सैन्य अभियान संचालित करता रहा।[40] पृथ्वीराज के छोटे भाई ने मुस्लिमों का आधिपत्य स्वीकार करने वाले भतीजे को गद्दी से उतारा और खुद राजा बन गया। हरिराज के सेनापति छत्रराज ने दिल्ली पर हमला किया, लेकिन कुतुबद्दीन से हार कर भागा। उसका पीछा करते हुए कुतुबद्दीन अजमेर आया और हरिराज को हराकर कब्जा कर लिया। वह अपना विस्तार आन्दिवाड़ा तक

करना चाहता था, लेकिन मेरो ने राजपूतों के सहयोग से उसे खदेड़ दिया और घायल होकर अजमेर के किले में शरण ली। राजपूतों ने किले को घेर लिया। यह घेरा कई माह रहा, लेकिन कुतुबद्दीन की मदद के लिए गजनी से सेना आई तो राजपूतों को पीछे हटना पड़ा। कुतुबद्दीन की मृत्यु के बाद राजपूतों ने तारागढ़ पर कब्जा कर लिया, लेकिन इल्तुतमिश ने उन्हें बेदखल कर दिया। इसके बाद तैमूर के आक्रमण तक अर्थात् चौदहवीं सदी के अंत तक अजमेर दिल्ली सल्तनत के अधीन रहा।[41] तैमूर के आक्रमण व अकबर के विजय के बीच के काल में यहाँ कई बार सत्ता परिवर्तित हुई। यह क्रमशः मालवा के मुस्लिम सुल्तानों गुजरात के सुल्तान व राजपूतों के अधिकार में रहा। सन् 1397 से 1409 के दौरान मेवाड़ के राव खमल ने अजमेर पर अधिकार कर लिया। 1455 के बाद मांउ के सुल्तान महमूद खिलजी ने अजमेर के हाकिम गजधरराय को हराकर अजमेर पर कब्जा कर लिया। करीब पचास साल बाद राणा रायमल के पुत्र पृथ्वीराज ने तारागढ़ पर कब्जा कर लिया। 1500 ई0 में जब सांगा मेवाड़ की गद्दी पर बैठा तो उसने कमरचन्द को अजमेर का शासक बनाया। 1533ई. अजमेर मेवाड़ के अधीन रहा और यह गुजरात के सुल्तान बहादुर शाह द्वारा छीन लिया गया। सन् 1533 में गुजरात के सुल्तान बहादुर शाह ने शमशेर उल मुल्क को भेजकर अपना अधिकार कर लिया। 1535 ई. में मेड़ता के राव बीरमदेव ने गुजरात के हाकिम को खदेड़ कर अजमेर छीन लिया गया। 1536ई. में जोधपुर के शासक मालदेव ने अजमेर का शासन कूंपावत महेश को सौंप दिया। मालदेव ने अजमेर के बीठलीगढ़ में महल, प्राचीर तथा बुर्ज का निर्माण करवाया तथा गढ में जलापूर्ति के लिए चक्र लगवाया। उस समय अजमेर मारवाड़ राज्य के 38 जिलों (परगनों) में से एक था जिसके अधीन 360 गांव आते थे जब मालदेव ने बीरमदेव को अजमेर से हराकर कूंपावत महेश को वहाँ का शासक बनाया तो वीरममाण्डू के सुल्तान से मदद मांगने गया किन्तु माण्डु द्वारा इंकार कर दिए जाने पर यह आगरा के सुल्तान शेरशाह सूरी के पास गया। शेरशाह ने अजमेर, जोधपुर पर भी अधिकार कर लिया। 1945 ई. में शेरशाह की मृत्यु हो गई और मालदेव ने फिर से जोधपुर तथा अजमेर पर अधिकार कर लिया। 1558 ई. में

मुगल सेना ने अजमेर दुर्ग एवं नगर पर अधिकार कर लिया। अकबर के समय में अजमेर मुगल साम्राज्य के 10 सूबों में से एक था। अकबर के समय में अजमेर को अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा पुनः हासिल हो गई। 1567 ई. में अकबर ने मोईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह के लिए 18गांव प्रदान किए तथा सांभर झील के नमक से होने वाली आय का एक प्रतिशत भाग दरगाह को दिया जाना निश्चित किया। 1568 ई. में चित्तौड़ विजय के बाद अकबर पैदल अजमेर जाया। इसके बाद 5 अगस्त, 1569 को अकबर के पुत्र सलीम का जन्म हुआ व पुनः ख्वाजा को धन्यवाद देने के लिए अजमेर आया व जून 1570 ई. में अकबर के दूसरे पुत्र मुराद का जन्म हुआ। इस बार उसने अकबर महल के नाम से महल बनवाया। 1592 ई. में अकबर ने अपने पूरे साम्राज्य को चार क्षेत्रों में बांटा। अजमेर, गुजरात, मालवा को मिलाकर एक क्षेत्र बनाया गया। 1599 ई. में अकबर ने शहजादा सलीम को अजमेर का गर्वनर बनाया ताकि वह अजमेर में रहकर मेवाड़ के राणा अमर सिंह के विरूद्ध लड़ाई जारी रख सकें। 1605 ई. में अकबर की मृत्यु हो गई। अकबर को अजमेर बेहद पसंद आया और उसने यहाँ शहरपनाह, दरगाह बाजार व शस्त्रागार बनवाए। वह साल में एक बार तो अजमेर आ ही जाता था। जहाँगीर यहाँ तीन साल रहा उसने यहाँ दौलत बाग बनवाया। शाहजहाँ ने बारादरी व दरगाह में जामा मस्जिद बनवाई। करीब दो सौ साल तक अजमेर मुगल साम्राज्य के अधीन रहा औरंगजेब की मृत्यु के बाद मुगल साम्राज्य का पतन शुरू हुआ। सन् 1791 ई. में सैयद बंधुओं के पतन के बाद जोधपुर नरेश अजीत सिंह ने कब्जा कर लिया। सन् 1721 में मुहम्मद शाह ने काजी मुजफ्फर के नेतृत्व में सेना भेजी, लेकिन अजीत सिंह के पुत्र अभयसिंह ने उसे भगा दिया। इसी दरम्यान जयपुर के राजा जयसिंह ने मुगल शासन की मदद की और अजमेर पर आक्रमण कर दिया। अभयसिंह की अनुपस्थिति में यहाँ की रक्षा कर रहे अमर सिंह को समझौता करना पड़ा और यहाँ फिर से मुगल साम्राज्य हो गया। सन् 1730 में गुजरात के सर बुलंदखान ने दिल्ली की अधीनता अस्वीकार कर दी। इस पर मुगल सम्राट ने अभय सिंह को अजमेर व गुजरात का हाकिम बनाने का लालच देकर उसकी सहायता से 1931 में गुजरात पर आधिपत्य कर लिया लेकिन भरतपुर

के जाट शासक चूडामण को दबाने के उपलक्ष्य में जयपुर के सवाई जयसिंह को अजमेर सौंप दिया। इससे यहाँ राठौड़ों व कछवाहों के बीच संघर्ष की स्थिति बन गई। सन् 1740 ई. में अभय सिंह के भाई बरंतसिंह ने भिनाय व पीसांगन के राजाओं की सहायता से अजमेर के हाकिम को हराकर यहाँ राठौड़ों द्वारा अधिकार कायम कर लिया। इस पर 8 जून, 1741 को गंगवाना के पास जयपुर व जोधपुर के बीच युद्ध हुआ और जयसिंह को संधि करनी पड़ी। राठौड़ों के जयसिंह के सात परगने मिले, जिनमें अजमेर भी शामिल हुआ। राजपूतों की आपसी लड़ाई का लाभ मराठों ने उठाया और मेड़ता के युद्ध में मराठों के सहयोग से जयपुर के राजा ईश्वरी सिंह ने जोधपुर के राजा विजय सिंह को हरा दिया। सन् 1756 से दो साल तक अजमेर मराठों व समसिंह के अधिकार में रहा। हालांकि छोटी–मोटी जंगे होती रही, लेकिन सन् 1791 तक मराठों का ही आधिपत्य रहा। मारवाड़ के भी मराज ने मराठा सूबेदार अनवर जंग से अजमेर छीन कर छोटे–भाई सिंघवी धनराज को सौंप दिया। कुछ दिन बाद ही मारवाड़ के राजा विजय सिंह ने रवखा के ठाकुर सूरजमल जो अजमेर किले के किलेदार थे को आदेश दिया कि अजमेर मराठों को सौंप दे। सन् 1800 ई. तक मराठों ने यहाँ घोर अत्याचार किया। इस कारण धीरे–धीरे उनके खिलाफ असंतोष पनपने लगा। सेना के सर्वोच्च सेनापति रहे लकवा दादा ने बगावत कर दी। सन् 1801 में मॉन्सपेरोन को अजमेर का गवर्नर बनाया गया। पैरोन की सहायता के लिए मिस्टर लॉ को अजमेर जिले का प्रशासक नियुक्त किया गया। 1818 में मराठों तथा अंग्रेजों के बीच हुई संधि के अनुसार अंग्रेजों के शासन क्षेत्र में आ गया। बापू सिधिंया के स्थान पर मि. बिल्डर को अजमेर का पहला सुपरिडेंट बनाया गया। इसके कुछ दिन बाद 10 नवम्बर, 1818 को अजमेर से 14 मील दूर नसीराबाद में अंग्रेज सैनिक छावनी स्थापित की गई।[42] 1824 ई. में बिल्डर के स्थान पर मि. हेनरी मिडलस को अजमेर का सुपरिटेंडेंट बनाया गया। उसके बाद 1827ई. में मि. केवेन्डिश को अजमेर का चार्ज दिया गया। मि. केबेन्डिश ने अजमेर नगर का आधुनिकीकरण किया तथा प्रशासन में भी कई सुधार किए। उसने कैवन्डिशपुरा के नाम से एक बस्ती भी बसाई। 1832ई. में अजमेर को एन.डब्ल्यू.पी. (नार्थ वेस्ट

प्रोविन्स) में स्थानांतरित कर दिया गया जिसका गर्वनर स्वयं भारत का गर्वनर जनरल लॉर्ड विलियम बैंटिक था। उसी वर्ष वैंटिक ने अजमेर की यात्रा की। किशनगढ़ का महाराजा कल्याण सिंह कोटा का महाराव रामसिंह, उदयपुर का महाराणा जवान सिंह, जयपुर का महाराजा सवाई जयसिंह, बूंदी का महाराजा राम सिंह तथा टोंक का नबाव अमीर खां अजमेर जाए। 1842 ई. में कर्नल डिक्सन अजमेर तथा मेरवाड़ा दोनों जिलों का प्रशासक बना और 1857 ई. में अपनी मृत्यु तक इस पद पर बना रहा। डिक्सन मेरवाड़ा के लिए वरदान साबित हुआ। उसने मेरवाड़ा क्षेत्रों में अनेकों जनता के हित के लिए कार्य करवाए। लोगों को उद्योग, कृषि और व्यापार की गतिविधियों में रोजगार प्राप्त हो सके इसके लिए उसने नया नगर के नाम से एक विशाल परकोटा युक्त नगर की स्थापना की और महाजनों को लाकर वहाँ बसाया आज वह नगर ब्यावर के नाम से जाना जाता है। ब्यावर बाद में मेरवाड़ा जिले का प्रशासनिक केन्द्र भी बना। डिक्सन के बाद कर्नल सदर लैण्ड अजमेर का शासक हुआ। 1857 ई. की क्रांति की चिंगारी मेरठ और दिल्ली से अजमेर पहुँची। अजमेर में उस समय 15वीं रेजीमेंट बंगाल नेटिव इंफेंटरी की दो कम्पनियाँ थी। उनके स्थान पर गैर रेजीमेंट को ब्यावर से अजमेर लाकर नियुक्त किया गया। सेनापति लारेंस का यह कदम अंग्रजों के हित में बहुत ही अनकूल सिद्ध हुआ और अजमेर बच गया। 1857 ई. में नोर्थ वेस्ट प्रोविन्स सरकार तथा एंजेट टू गर्वनर जनरल राजपूताना के अधीन अजमेर मेरवाड़ा के पहले डिप्टी कमीशनर की नियुक्ति की गई और कैप्टन बी.पी. लायड़ को इस पद पर लगाया गया। 1870 में भारत का वायसराय लार्ड मेयो भी अजमेर आया। 1875 में मि.ला. टाउच ने प्रांत का प्रथम 20 वर्षीय सैटलमेंट आरंभ किया। इसके साथ ही व्यवस्थित विकास एवं आधुनिकीकरण का काम आरंभ हुआ, नये सरकारी भवन बनाए गए, विद्यालय खोले गए तथा रेलवे लाइन बिछाई गई 1875 ई. में लोको वर्कशॉप बना। 1885 में अजमेर से पहला समाचार पत्र राजस्थान टाइम्स प्रकाशित हुआ। यह अंग्रेजी में था। 1911 में ब्रिटिश महारानी अजमेर में आई। उनके आगमन की स्मृति में किंग एडवर्ड मेमोरियल हॉल का निर्माण किया गया।

15 अगस्त, 1947 को राजपूताना एजेंसी भंगकर दी गई। 26 जनवरी 1950 को पाठ पीपलोदा का जिला मध्य भारत नामक प्रांत में स्थानांतरित कर दिया गया तथा अजमेर को केन्द्र शासित प्रदेश बने रहने दिया गया। 1 नवम्बर, 1956 को अजमेर का राजस्थान में विलय कर दिया गया।[43]

(2) भौगोलिक परिचय :

अजमेर शहर राज्य की राजधानी जयपुर से लगभग 138 किमी. पश्चिम में स्थित है। वर्तमान में अजमेर जिला $25^0$38 से $26^0$58 उत्तरी अक्षांश तथा $73^0$54 से. $75^0$22 पूर्वी देशान्तरों के मध्य स्थित है। जिले का कुल 8481 वर्ग किलोमीटर के साथ तिकोने आकार के रूप में समुद्र तल से 870 मीटर की ऊँचाई पर अवस्थित है। जिले के उत्तर में नागौर जिला, दक्षिण में भीलवाड़ा जिला, पूर्व में जयपुर व टोंक जिला तथा पश्चिम में पाली जिला है। अजमेर, अरावली पर्वत श्रृंखला में स्थित है, जो पूर्व में मैदान की पहाड़ी तो पश्चिम में तारागढ़ व नाग पहाड़ से घिरा हुआ है। इसकी मजबूत चट्टानें विशाल सहारा रेगिस्तान से अजमेर की रक्षा करती हैं। यह जयपुर से 138, दिल्ली से 399, अहमदाबाद से 4879 मुम्बई से 1038 किलोमीटर दूरी पर स्थित है।[44]

साधारणतया यह एक समतल मैदान है, जिसके बीच में नीची पहाड़ियां हैं जो अजमेर उपखण्ड के उत्तरी भाग में उत्तर–पश्चिम दिशा में जाती है। मारवाड़ के मैदानों को मेवाड़ के ऊँचे पठार से अलग करने वाली अरावली पर्वत श्रेणी जिले से ऊपर होकर गुजरती है। अजमेर जिला भारत के पश्चिमी भाग में तथा राजस्थान के मध्य में स्थित है। यह संसार की प्राचीनतम मोड़दार अरावली पर्वत श्रेणी के मध्य स्थित तारागढ़ पर्वत की तलहटी में बसा हुआ है। जो समुद्र तल से 1300 फुट ऊँचा है। अरावली पर्वत श्रेणी अजमेर नगर के निकट प्रकट होती है तथा यहाँ की पहाड़ियां समानान्तर क्रम में दिखाई पड़ती हैं। इसकी उच्चतम चोटी अजमेर नगर के निकट समुद्रतल से लगभग 870 मीटर ऊँची है जिस पर तारागढ़ दूर नाग पहाड़

है। पूरे अजमेर जिले में अरावली पर्वतमाला छितरी हुई है। केवल उत्तर पश्चिम क्षेत्र के मैदानी क्षेत्र में रेतीले टीले पसरे हुए हैं।[45]

(3) नदियाँ :

अजमेर, नसीराबाद के मध्य स्थित अरावली पर्वत श्रेणी भारत के जल विभाजक क्षेत्र के रूप में विशिष्ट पहचान रखती है। इस पर्वत श्रेणी के पूर्व की ओर का पानी चम्बल आदि नदियों द्वारा बंगाल की खाड़ी में पहुँचता है तथा पश्चिमी भाग का जल लूनी नदी द्वारा अरब सागर में गिरता है। अजमेर के पश्चिम में नाग पहाड़ पर अजयपाल की घाटी से सागरमती नदी निकलती है जो भांवला, डूमाड़ा तथा पीसांगन होते हुए गोविन्दगढ़ में सरस्वती नदी में जा मिलती हैं और दोनों मिलकर लूणी नदी बनाती है। लूणी शब्द लवणाद्रि से बना है जिसका अर्थ 'लवण' के पहाड़ों से निकली हुई नदी होता है। जिले में होकर बहने वाली बनास, खारी, साबरमती, सरस्वती तथा रूपनगर आदि सभी नदियां गर्मी के मौसम में मात्र नाला बनकर रह जाती हैं किन्तु वर्षा काल में उग्र रूप धारण कर लेती हैं। बनास नदी उदयपुर से निकलकर अरावली पर्वत श्रृंखला में बहती हुई अजमेर के दक्षिण पूर्व में देवली से आगे जाती हैं। इसी बनास पर बीसलपुर में बांध बनाया गया है जिससे अजमेर नगर को जल आपूर्ति की जाती है।[46]

झरने–झीलें :

तारागढ़ के आसपास की पहाड़ियों से चावण्डा, गौकुण्ड, पंचकुण्ड अगस्ताजी तथा कनबाई नामक पहाड़ी धाराएँ निकलती हैं। चश्मा, अंतेढ़ की माता तथा बैज से बरसाती झरने बहते हैं। इसके आसपास आनासागर, वीसलसागर, फायसागर नामक कृत्रिम झीलें हैं। इन सबको मिलाकर अजमेर नगर का दृश्य बड़ा सुन्दर दिखाई पड़ता है। जब पुष्कर घाटी से अजमेर नगर के लिए उतरते हैं तो इस नगर की सुंदरता देखते ही बनती है।

भौतिक स्वरूप :

क्षेत्रफल :

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार जिले का कुल क्षेत्रफल 8481 वर्ग किलोमीटर है। वर्ष 2011 की जनगणना अनुसार इसकी जनसंख्या 21.82 लाख है। इसका घनत्व 257 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है।[47]

मृदा (मिट्टी) :

जिले की मिट्टी सामान्यतः कछारी है परन्तु जिले का उत्तर पूर्वी भाग रेतीला है। जिले के केकड़ी विजयनगर क्षेत्र के आसपास काली एवं दुमट मिट्टी पाई जाती है।

भूमि उपयोग :

जिले का भौगोलिक क्षेत्रफल 834048 हैक्टेयर है। परन्तु कृषि उपयोग में आने वाली जमीन का 2012–13 में प्रतिवेदित क्षेत्रफल निम्नानुसार है[48] :

क्रसं.	भूमि का उपयोग	क्षेत्रफल (हैक्टेयर में)	प्रतिशत
1	वन	57729	6.84
2	कृषि अयोग्य भूमि	136531	16.19
3	जोत रहित भूमि	146956	17.43
4	पडत भूमि	47555	5.64
5	वास्तविक बोया गया क्षेत्रफल	454277	53.88
	योग	**843048**	

जलवायु :

जिले की जलवायु सामान्य रूप से शुष्क एवं स्वास्थ्यवर्धक है। शीतकाल दिसम्बर से फरवरी तक रहता है जबकि ग्रीष्मकाल मार्च से जून माह तक रहता है। वर्ष 2011 में अधिकतम तापमान 44.6^0 सै. तथा न्यूनतम तापमान 5.9^0 सै. अंकित किया गया।

नदियाँ, बांध, तालाब :

जिले में होकर बहने वाली 5 नदियां यथा–बनास, खाड़ी, साबरमती, सरस्वती, रूपनगर हैं। जिले में बूढ़ा पुष्कर, सरगांव व करातियां नामक प्राकृतिक झीलें हैं। जिले में महत्वपूर्ण तालाबों में फाईसागर, फूलसागर, बीर अजमेर बिसाला, रामसर, दिलवाड़ा, कालिंजर, जवाजा एवं मकरेड़ा इत्यादि हैं।[49]

आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति :

आर्द्रता :

दक्षिण पश्चिम मानसून की अवधि में सापेक्ष आर्द्रता सामान्यतः 60 प्रतिशत से अधिक होती है। शेष वर्ष भर हवा शुष्क रहती है। वर्ष में शुष्कतम भाग ग्रीष्म ऋतु का होता है। उसमें भी दोपहर में 20 से 30 प्रतिशत तक आर्द्रता कम हो जाती है।

वनस्पति :

अजमेर नगर में नीम, पीपल, बरगद, अशोक, मौलश्री, अमलतास, अर्जुन, सेमल आदि गर्म मैदानी क्षेत्रों में पाए जाने वाले वृक्षों की भरमार है। घरों के आसपास आम, अमरूद, जामुन, कैरूंदा, नीबू, पपीता, आंवला, आड़ू, इमली आदि फलदार वृक्ष भी बड़ी संख्या में लगे हुए हैं। अजमेर नगर के चारों ओर की पहाड़ियों में जंगल, रोहिड़ा, बबूल, खेजड़ी, शिरीष, तलाश, पीलू, सेंजना आदि मध्यम उँचाई के वृक्ष पाए जाते हैं। साथ ही कैर, कुमटी, गोंद, गूगल, धौक, तेंदू, थोर आदि की झाड़ियां तथा कई प्रकार की घासें पाई जाती हैं।

पशु–पक्षी :

अजमेर नगर में गाय, बैल, भैंस, ऊँट, बकरी, भेड़, गधे, घोड़े, खच्चर तथा टट्टू आदि जानवर पाले जाते हैं। बहुत से घरों में मुर्गियां, बत्तखें, तोते, रंग–बिरंगी चिड़ियाएँ एवं मछलियां पाली जाती हैं। सूअर पालन और मुर्गी पालन का काम बड़े स्तर पर होता है। मछली पालन भी अल्प मात्रा में होता है।

अजमेर नगर के चारों ओर की पहाड़ियां में बंदर तथा नीलगाय बड़ी संख्या में रहते हैं। इन पहाड़ियों में कोबरा, क्रेट, वाईपर, दो–मुंहे सर्प तथा पहाड़ी बिच्छू निवास करते हैं। किसी समय नाग पहाड़ सरीसृपों के निवास के लिए प्रसिद्ध था।

प्रमुख फसलें :

जिले में रबी की फसलें प्रमुख हैं तथा साथ में खरीफ एवं जायद रबी की फसलें भी बोयी जाती हैं।

रबी :

गेहूँ, जौ, चना, सरसों, अलसी, मटर, जीरा, धनिया, मैंथी आदि।

खरीफ :

कपास, मक्का, बाजरा, ज्वार, मूंगफली, तिल, गन्ना, उड़द, मूंग, मोठ आदि। इसके अतिरिक्त जिले में व्यावसायिक दृष्टि से फल और सब्जियाँ भी बाई जाती हैं। अमरूद, पपीता, नींबू, जामुन, शहतूत और आम के पेड़ भी आमतौर पर पाए जाते हैं। नदियों के पेटे में खरबूजा, ककड़ी, तरबूज भी पैदा किए जाते हैं। जिले में फल एवं सब्जियाँ भी प्रचुर मात्रा में पैदा होती हैं।

(4) शिक्षा :

शिक्षा की दृष्टि से अजमेर काफी महत्त्वपूर्ण केन्द्र है। यहाँ मेयो कॉलेज (1875) के अलावा क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान (रीजनल कॉलेज ऑफ एजुकेशन), राजकीय महाविद्यालय (गवर्नमेंट कॉलेज), सोफिया स्कूल (1918) एवं सोफिया

कॉलेज (1942), सेंट एंसेलम्स स्कूल (1904), अजमेर म्यूजिक कॉलेज (1942) भी प्रसिद्ध है। इनके अलावा अजमेर में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं केन्द्रीय विश्वविद्यालय (सेंट्रल युनिवर्सिटी), इंजीनियरिंग एवं मेडीकल कॉलेज के अलावा सैनिक (मिलीटरी) स्कूल, केन्द्रीय विद्यालय भी स्थित है। 2011 की जनगणना के अनुसार अजमेर जिले की साक्षरता दर 70.46 प्रतिशत है जिसमें 83.93 प्रतिशत साक्षर पुरुष एवं 56.42 प्रतिशत महिलायें साक्षर थी।

(5) आर्थिक :

उद्योग की दृष्टि से अजमेर प्राकृतिक सम्पदा से भरा हुआ क्षेत्र है। इस क्षेत्र में क्वाट्ज़, फेल्स्पार, अभ्रक, संगमरमर की खाने हैं तथा इन्हीं पर आधारित औद्योगिक इकाईयाँ कार्यरत हैं। इनके अलावा कपास, ऊनी वस्त्र, चमड़ा, होजरी, साबुन तथा फार्मास्युटीकल उत्पादों का निर्माण एवं बिक्री भी यहाँ के प्रमुख व्यवसाय हैं। किसानों के लिये अनाज, दलहन, तिलहन, सब्जियाँ, फल आदि के साथ–साथ गुलाब की खेती, पोल्ट्री फॉर्म आय के मुख्य साधन है। माखुपुरा, पालरा, गेगल, किशनगढ़, नसीराबाद, सावर, ब्यावर आदि औद्योगिक क्षेत्रों में इंजीनियरिंग, री–रोलिंग, मिल्स, इलेक्ट्रोनिक्स सामान निर्माण, मिनरल ग्राईंडिंग इकाईयाँ है। अकेले किशनगढ़ में लगभग 7000 लोगों को रोजगार देते हुए मार्बल उद्योग की सैंकड़ों ईकाइयाँ हैं, जिनमें आर के मार्बल का नाम तो गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में शामिल है।

(6) धार्मिक दृष्टि :

धार्मिक दृष्टि से अजमेर में सुफी संत ख्वाज़ा मोईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह स्थित है, जहाँ प्रतिवर्ष अन्तर्राष्ट्रीय उर्स भरता है जिसमें देश–विदेश से लाखों जायरीन शिरकत करते हैं। तारागढ़ की तलहटी में स्थित इस दरगाह के निर्माण एवं पुनरुत्थान में हैदराबाद के निज़ाम, शाहजहाँ, अकबर आदि ने योगदान दिया। 14वीं शताब्दी में निर्मित विश्व का एक मात्र ब्रह्माजी का मन्दिर अजमेर से 11 कि.

मी. दूर पुष्कर में स्थित है जहाँ प्रतिवर्ष कार्तिक पूर्णिमा को विश्व प्रसिद्ध मेला भरता है, जिसमें देश–विदेश से लाखों श्रद्धालु आते हैंत था पवित्र पुष्कर सरोवर में स्नान एवं पूजा–अर्चना कर पुण्य कमाते हैं। पुष्कर झील में चहुँओर 52 घाट एवं पुष्कर कस्बे में अनगिनत मन्दिर हैं।

(7) पर्यटन स्थल :

पर्यटन की दृष्टि से अजमेर के अन्य दर्शनीय स्थल हैं–1153 में निर्मित हिन्दु वैष्णव मन्दिर को 1193 में कुतुब्बुद्दीन ऐबक द्वारा तोड़ कर बनाया गया ''अढ़ाई दिन का झोंपड़ा'', उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में निर्मित दिगम्बर जैन पंथ का मन्दिर ''सोनी जी की नसिया'', साँई बाबा का मन्दिर, अंतिम हिन्दु सम्राट पृथ्वीराज चौहान का स्मारक, दाहरसेन का स्मारक, महाराजा आना जी द्वारा 1135–1150 में निर्मित आनासागर झील, जिसके किनारे सम्राट शाहजहाँ द्वारा संगमर से बनवाई गयी बारादरी, सम्राट जहाँगीर द्वारा निर्मित सुभाष उद्यान (दौलत बाग), बजरंग गढ़, राजा अजयपाल चौहान द्वारा द्वारा तारागढ़ की पहाड़ियों पर निर्मित ''तारागढ़ किला'', 1892 में अकाल राहत कार्य के अंतर्गत निर्मित ''फॉय सागर झील'', अकबर के पुत्र सलीम का कभी निवास स्थान रहा अजमेर का किला एवं संग्रहालय (मेगेज़ीन), भारत के वायसराय लॉर्ड मेयो द्वारा 1875 में निर्मित मेयो कॉलेज, वाटर–पार्क, नारेली जैन तीर्थ आदि।

(8) परिवहन :

अजमेर देश के सभी प्रमुख नगरों से रेल एवं रोड द्वारा जुडा हुआ है। किशनगढ़ (25 किमी) में हवाई अड्डे का कार्य प्रगति पर है तथा 2016 से अजमेर भी देश की हवाई सेवा से जुड़ जायेगा।

(9) राजनीतिक एवं प्रशासनिक स्थिति[50]

अजमेर जिला निम्नलिखित 12 उपखण्डों एवं 16 तहसीलों में विभाजित है–

क्रसं.	उपखण्ड का नाम	तहसील का नाम	ग्रामों की संख्या	जनसंख्या(2011)
1	उपखण्ड अजमेर	अजमेर	76	1547642
2	पीसांगन	पीसांगन	65	127803
3	ब्यावर	ब्यावर	183	191783
4	नसीराबाद	नसीराबाद	90	136682
5	मसूदा	मसूदा	106	185713
		विजयनगर	57	32124
6	केकड़ी	केकड़ी	57	160868
		सावर	47	10705
7	भिनाय	भिनाय	95	126466
8	सरवाड़	सरवाड़	102	134366
		टांटोटी	13	5104
9	किशनगढ़	किशनगढ़	61	263345
		अराई	55	7353
10	पुष्कर	पुष्कर	22	1204
11	टाटगढ़	टाटगढ़	46	2272
12	रूपनगढ़	रूपनगढ़	61	12505
		योग	**1136**	**2945935**

जिले में 7 शहरी स्थानीय निकाय व एक जिला परिषद, 8 पंचायत समितियाँ तथा 276 ग्राम पंचायतें है जिनमें 138 महिला नेतृत्व वाली ग्राम पंचायतें है जो कि प्रस्तुत शोध विषय का अध्ययन क्षेत्र है।

जिला परिषद् का मुख्यालय अजमेर में स्थित है।

शहरी स्थानीय निकायों का विवरण :

क्रसं.	स्थानीय निकाय	शहर/कस्बा
1	नगर निगम	अजमेर
2	नगर परिषद	ब्यावर
3	नगर पालिका	केकड़ी
4	नगर पालिका	पुष्कर
5	नगर पालिका	विजयनगर
6	नगर पालिका	किशनगढ़
7	नगर पालिका	सरवाड़
8	छावनी मण्डल	नसीराबाद

जिले में 8 विधानसभा क्षेत्र–अजमेर उत्तर, अजमेर दक्षिण, केकड़ी, किशनगढ़, ब्यावर, पुष्कर एवं नसीराबाद हैं। अजमेर जिला संसदीय क्षेत्र सामान्य में आता है। अजमेर जिले का ब्यावर विधानसभा क्षेत्र राजसमंद संसदीय क्षेत्र निर्वाचन क्षेत्र में सम्मिलित है।

क्रसं.	पंचायत समितियाँ (8)	ग्राम पंचायतें (276)
1	जवाजा	35
2	श्रीनगर	38
3	अराई	30
4	भिनाय	35
5	केकडी	31
6	पीसांगन	45
7	किशनगढ़	31
8	मसूदा	31

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि अजमेर जिला जो कि जयपुर, भीलवाड़ा के काफी समीप है जिसका प्रभाव इसकी बहुआयामी संस्कृति पर दिखाई देता है। ख्वाजा साहब की दरगाह व पुष्कर ब्रह्माजी मन्दिर की समीपता होने के कारण यहाँ की आर्थिक स्थिति भी अच्छी है। इन सभी कारकों को ध्यान में रखते हुए इस सन्दर्भ में प्रस्तुत अध्ययन हेतु शोध समस्या के रूप में ''ग्रामीण स्थानीय नेतृत्व एवं सुशासन'' (अजमेर जिले की महिला सरपंचों के सन्दर्भ में एक अनुभवपरक अध्ययन) को चुना है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. स्नेहलता कलकल, ग्रामीण नेतृत्व की उभरती प्रवृत्तियाँ, क्लासिक पब्लिकेशन, 2001, पृ.सं. 56
2. डेविड ईस्टन, पॉलिटिकल सिस्टम, अल्फर्ड ऑफ न्यूर्याक, 1960
3. प्रकाश नारायण नाटाणी, राजस्थान निर्माण के पचास वर्ष, पोइन्टर पब्लिशर्स, जयपुर, 1999, वाल्यूम 1, पृ.सं. 1
4. कर्नल जैम्स टॉड, ''राजस्थान का इतिहास'', साहित्यागार प्रकाशन, जयपुर, 2003
5. प्रकाश नारायण नाटाणी, राजस्थान निर्माण के पचास वर्ष, पोइन्टर पब्लिशर्स, जयपुर, 1999, वॉ.–1, पृ.सं. 1–2
6. प्रकाश व्यास, ''राजस्थान का स्वाधीनता संग्राम'', पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1997
7. बी.एल. पानगड़िया, राजस्थान का इतिहास, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, 1996, पृ.सं. 1
8. सुखबीर सिंह गहलोत, राजस्थान स्वतंत्रता पूर्व एवं पश्चात् (1857–1997), जैन ब्रदर्स, जोधपुर, 1998, पृ. 1
9. कर्नल जैम्स टॉड, राजस्थान का इतिहास, साहित्यागार प्रकाशन, जयपुर, 2003
10. मोहनलाल गुप्ता, राजस्थान का सूचना सार 2003, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, 2003, पृ.सं. vii
11. भंवर लाल गर्ग, आनंद प्रकाश भारद्वाज, राजस्थान : भौगोलिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन, शिवा पब्लिशर्स, उदयपुर, 2000, पृ.सं. 15

12. बी.एल. पानगडिया, राजस्थान का इतिहास, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, जयपुर, 1996, पृ.सं. 1–2

13. भंवर लाल गर्ग, आनंद प्रकाश भारद्वाज, राजस्थान : भौगोलिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन, पृ.सं. 24–25

14. सीताराम झालानी, राजस्थान वार्षिकी, पंचगंगा प्रकाशन, जयपुर, 1998

15. एस.आर. भल्ला, सामयिक राजस्थान, कुलदीप पब्लिकेशन्स, जपयुर, 2010, पृ. सं. 8

16. प्रो. के.एल. कमल, पार्टी पॉलिटिक्स इण्डियन स्टेट, राजस्थान, दिल्ली, 1970

17. मोहन लाल गुप्ता, राजस्थान ज्ञान कोष, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, 2015, पृ.सं. 729–730

18. गिरिराज प्रसाद पारीक, राजस्थान एक अध्ययन, पृ.सं. 136

19. करूणा पाण्डेय, राजस्थान का सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन प्रशासनिका, ह.च.मा. राजस्थान राज्य लोक प्रशासन संस्थान, जयपुर, पृ.सं. 152, 155

20. पत्रिका इयर बुक 2013, राजस्थान पत्रिका प्रकाशन, जयपुर, 2013, पृ.सं. 64

21. http:/www.mapsofindia.com/census2011Accssedon2/2/2012

22. http://www.censusindia.gov.in/2011/census/censusinfodoshboard/stock/profiles/en/Ind-India.pdf/Accssedon2/2/2012

23. http://www.census2011.co.inAccssedon2/2/2012

24. सीताराम झालानी, राजस्थान नूतन पुरातन, राजस्थान स्वर्ण जयंती प्रकाशन, जयपुर, 2007, पृ.सं. 71

25. शालिनी त्यागी, पंचायत राज व्यवस्था में सत्ता शक्ति का विकेन्द्रीकरण, नवजीवन पब्लिकेशन, जयपुर, 2006, पृ.सं. 57

26. प्रकाश विश्वास, राजस्थान कल, आज और कल, अरविन्द बुक आउस, जयपुर, 1993

27. मोहन लाल गुप्ता, राजस्थान ज्ञान कोष, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, 2007, पृ. 47

28. पत्रिका इयर बुक, 2013, राजस्थान पत्रिका प्रकाशन, जयपुर, 2013, पृ.सं. 66

29. रविन्द्र कुमार दुलार, राजस्थान में धार्मिक आस्था के केन्द्र एवं पर्यटन, पेमाराम (सं.) राजस्थान में धर्म सम्प्रदाय व आस्थाएँ, नवजीवन पब्लिकेशन, टोंक, 2004

30. एल.आर. मल्ला, सामयिक राजस्थान, कुलदीप पब्लिकेशन, जयपुर, 2010, पृ. सं. 8

31. प्रकाश विश्वास, राजस्थान कल, आज और कल, अरविन्द बुक हाउस, जयपुर, 1993, पृ.सं. 64–69

32. मोहन लाल गुप्ता, राजस्थान ज्ञान कोष, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 2015, पृ.सं. 733–734

33. जिला अजमेर, 2013, उपनिदेशक, आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग

34. http://ajmernama.com/ajmerataglance/about_ajmer

35. डॉ. मोहनलाल गुप्ता, अजमेर का वृहत् इतिहास, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 2012, पृ.सं. 8

36. डॉ. मोहनलाल गुप्ता, राजस्थान का जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 2004, पृ.सं. 18, 19

37. http://ajmernama.com/ajmerataglance/about_ajmer

38. डॉ. मोहन लाल गुप्ता, अजमेर का वृहत् इतिहास, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 2012, पृ.सं. 13–14

39. http://ajmernama.com/ajmerataglance/about_ajmer

40. डॉ. मोहन लाल गुप्ता, राजस्थान का जिलेवार, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 2004, पृ.सं. 20–21

41. http://ajmernama.com/ajmerataglance/about_ajmer

42. डॉ. मोहन लाल गुप्ता, राजस्थान का जिलेवार, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 2017, पृ.सं. 23–24

43. http://ajmernama.com/ajmerataglance/about_ajmer

44. डॉ. मोहन लाल गुप्ता, अजमेर का वृहत् इतिहास, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 2012, पृ.सं. 9

45. www.aapnorajasthan.org/ajmer/php

46. डॉ. मोहन लाल गुप्ता, अजमेर का वृहत् इतिहास, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 2012, पृ.सं. 10–11

47. www.rajgkbook.blogspot.in/2012/01/blog_post_html

48. डॉ. मोहन लाल गुप्ता, अजमेर का वृहत् इतिहास, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 2012, पृ.सं. 11–12

49. पत्रिका इयर बुक 2013, राजस्थान पत्रिका प्रकाशन, जयपुर, 2013, पृ.सं. 11

50. जिला अजमेर, 2013, उपनिदेशक, आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग